राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 600
मैड्यूसा
नागराज व ध्रुव का मल्टीस्टार विशेषांक
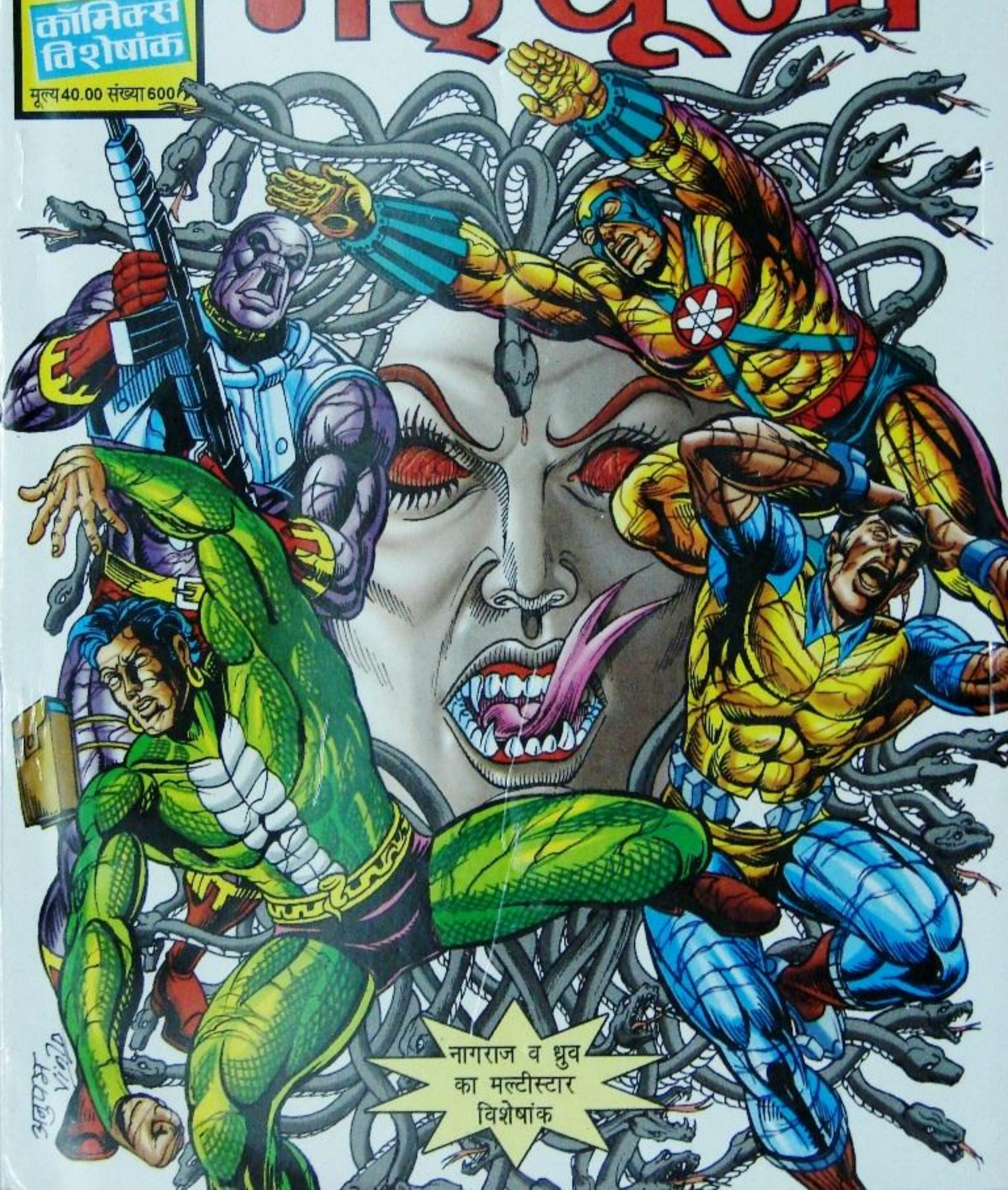
पृथ्वी पर से मानवों का नाश करके नागों की काली शक्तियों को फिर से स्थापित करने के लिए आ गई है काली शक्तिधारी नागों की रानी...
मैडयूसा
संजय गुप्ता की पेशकश
...और ये काम मेरे लिए वे ही मानव करेंगे, जिनको तुम अपना मित्र कहते हो!
कथाः जॉली सिन्हा
चित्र : अनुपम सिन्हा
इंकिंग : विनोदकुमार
सुलेख एवं रंगः सुनील पाण्डेय
सम्पादकः मनीष गुप्ता
इसकी तरफ मत देखना, नागराज! वर्ना हमारा भी वही हाल होगा जो परमाणु और डोगा का हुआ है!
ये तो मैं समझ गया हूं, ध्रुव!
बस एक बात समझ में नहीं आ रही है। पत्थर का बनने के बाद भी डोगा और परमाणु हरकत कैसे कर पा रहे हैं? और ये मैडूयसा का आदेश मानने के लिए मजबूर क्यों हैं?

प्रकृति का एक सीधा सा नियम है! वही बचेगा, जो जीतेगा-
पशुओं की सारी प्रजातियां एक दूसरे को अपना आहार बनाकर और एक दूसरे की संख्या घटाकर जीवित हैं-
मानव भी यही करता है! बस फर्क इतना सा है कि मानव ऐसा अपने बसने का स्थान बनाने के लिए करता है! और इस काम में जो भी जीव उसके रास्ते में आता है उसको हटना पड़ता है... या मरना पड़ता है-
पर अब ऐसा होने की बारी मानवों की है! क्योंकि कोई और प्रजाति अपने बसने के लिए और ज्यादा जगह की तलाश कर रही है! और मानव उसके लिए एक खतरा है-
मानवों को नागों का रास्ता छोड़ना ही होगा! अब हम ज्यादा छिपकर नहीं रह सकते! मानवों को नागों का राज स्वीकारना ही होगा! वर्ना अब नाग संहार नहीं, नर संहार होगा!
जागो! नागों की काली शक्तियों जागो!
नागों की सबसे काली शक्ति मेरी मदद के लिए आओ! मुझे रास्ता दिखाओ!
बताओ मुझे कि नागों का राज पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए मैं क्या करूं?

पता नहीं इस रहस्यमय तांत्रिक की कहानी खत्म हो गई थी।

या अभी शुरू ही हुई थी-
हमारी सरकार को इस बियावान-सुनसान इलाके के अलावा कोई और जगह नहीं मिली थी!
नागराज के खजाने के लिए इस स्थान से सुरक्षित और कोई जगह हो ही नहीं सकती, शर्मा! ये एक न्यूक्लियर बंकर है! एटम बम तक के धमाके से सुरक्षित है ये जगह!
यहां पर हम आराम से इस खजाने का मूल्य आंक सकते हैं! एक-एक रत्न को ध्यान से देख सकते हैं! अब देखो, ये हीरा दो सौ कैरेट का है! और इसकी कीमत कम से कम पचास करोड़ होगी!
अज्ञात वस्तु
हां! सुना था कि पहले भी किसी तांत्रिक नगीना ने इसको लूटने की कोशिश की थी!
नागराज का खजाना जितना कीमती है, उतने ही खतरनाक हैं इस खजाने को लूटने की इच्छा रखने वाले लुटेरे!
अरे! यह क्या है?

रत्नों की गुणवत्ता को परखने वाला मीटर इस रत्न को 'अज्ञात वस्तु' क्यों बता रहा है?
ज़रा देखिए तो सर!
अज्ञात वस्तु
अभी आया!
कमाल है! मैं चालीस सालों में दुनिया भर के सारे भिन्न-भिन्न किस्मों के रत्न देख चुका हूं!
पर ऐसा रत्न तो मैंने आज तक नहीं देखा!
ये आखिर है क्या?
जो भी है...
कड़ाक
आऊ!
ये... ये क्या चीज है?
...वह मेरा है!
दे दो!
सही कहा! ये आदमी नहीं कोई चीज ही लगता है!
क्योंकि कोई आदमी इतना ताकतवर नहीं हो सकता कि पांच फुट मोटी कंक्रीट की दीवार तोड़ सके!
सिक्योरिटी को बुलाइए! ये जरूर खजाने को लूटने आया है!

सिक्योरिटी पर तैनात पैरामिलिट्री के जवानों को बुलाने की जरूरत नहीं पड़ी-
कैसी आवाज थी ये? क्या हुआ है यहां पर?
ये... ये चीज... मेरा मतलब आदमी कंक्रीट की दीवार तोड़कर जमीन के नीचे से यहां पर आ गया है! और... और... ये खजाना मांग रहा है!
कोई टैंक भी ये दीवार नहीं तोड़ सकता! इसने जरूर विस्फोटकों का इस्तेमाल किया होगा!
और विस्फोटकों की हमारे पास कोई कमी नहीं है!
आत्मसमर्पण कर दो, घुसपैठिए!
कभी नहीं!
तो फिर...
... मर जाओ!
शूट टू किल!
गोलियां इसके आर-पार जा रही हैं, कैप्टेन!
ऐसे... ऐसे...
तड़तड़तड़तड़तड़तड़तड़ तड़ तड़ तड़तड़
... जैसे कि ये...

धुएं का बना हो!

ये तो सचमुच धुएं का ही बना है!

ओफ़! कुछ नजर नहीं आ रहा है!

और ये धुआं तेज प्रेशर के साथ हमारे फेफड़ों में... खौं... खौं...घुस रहा है!

मेरा पूरा शरीर अकड़ रहा है! कहीं ये धुआं हमारी नसों में भी तो नहीं घुस रहा है! खौं खौं!

अगर ऐसा हुआ...

"तो हम कालिख की मूर्ति बन जाएंगे-"
"खौं खौं-"
ओ गॉड! ओ गॉड! ये गॉर्ड तो गए काम से!
अब हम इसको खज़ाना लूटने से कैसे रोकेंगे?
ये... ये काम तो गॉर्डों का है! मेरा मतलब था, हमारा नहीं! ये जो चाहे ले जाने दो! हम भला अपनी जान जोखिम में क्यों डालें!
कायर मत बनो शर्मा! ये प्राणी जरूर किसी खास मकसद से यहां आया है! और अगर इसने खज़ाना हासिल करने का मकसद पूरा कर लिया तो ये हमारे साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए खतरा बन सकता है!
ये खज़ाना हमारी जिम्मेदारी पर यहां छोड़ा गया है! और हम इसको बचाकर ही रहेंगे!
ठीक है, सर! मुझे अभी-अभी ध्यान आया कि मैंने अपना बीमा करा रखा है!
और हां! एक बात और ध्यान में आई है!
इसने पूरे खज़ाने को नहीं, बल्कि सिर्फ इस अजीबोगरीब रत्न के बारे में कहा था कि ये मेरा है! शायद इसको सिर्फ यही चाहिए!
और एक रत्न की सुरक्षा करना कोई बड़ी बात नहीं है!

भागो! अगर ये खजाना छोड़कर हमारे पीछे आया तो हमको पता चल जाएगा कि तुम्हारा ख्याल सही था, शर्मा!
रुक जाओ! ये रत्न लेकर, तुम धूमधर से दूर नहीं भाग सकते!
ये हमारे ही पीछे आ रहा है! सर! तब तो हमारा काम बन गया! हम इसको ट्रैप कर सकते हैं!
पर कैसे?
सुनिए सर! हम उस कमरे से होकर भागेंगे, जिसमें ...फुस फुस फुस!
तुममें कुछ ज्यादा ही हिम्मत आ गई है, शर्मा!
कितने का है तुम्हारा बीमा?
दोनों को जिस कमरे से होकर भागना था, वह सुरक्षा बलों के विस्फोटकों का गोदाम था–
अब मुझको यह हथगोला उठाना है!
और इसकी पिन खींचकर इसको पीछे विस्फोटकों से भरे कमरे में उछाल देना है!

धूम्रधर के उस कमरे से बाहर आ पाने से पहले ही हथगोला फट गया-
और धमाकों की श्रृंखला ने पूरे बंकर को हिलाकर रख दिया-
बूम
ओऽऽऽ ह!
खों खों! देखा शर्मा का दम सर! वह नागराज का खजाना उड़ाने आया था! पर मैंने उसे ही उड़ा दिया!
तुम तो कुछ ज्यादा ही साहसी निकले शर्मा! पर अब इस धुंए को भी बाहर निकालो!
वर्ना ये बारूदी धुआं.. खों खों... हमारी भी जान ले लेगा!
मैं अभी 'एग्जास्ट सिस्टम' को ऑन करता हूं सर!
पर शर्मा के कदम ठिठककर रह गए-
ये क्या हो रहा है? यहां तो हवा का कोई झोंका नहीं है! फिर ये धुआं उड़कर मेरे सामने क्यों आ रहा है!
क्योंकि मुझको ये रत्न चाहिए!

हे भगवान! धमाके भी इसको खत्म नहीं कर पाए! अब हम क्या करें?
मरो!
धुआं हमें गला रहा है! ह... हम भी धुआं बनते जा रहे हैं! नहीं... नहीं!
नहींऽऽऽ
कुछ ही पलों बाद- वहां पर कपड़ों के ढेर और धूम्रधर के अलावा अगर कुछ और था तो सिर्फ धुएं का एक गुबार और वह-
अद्भुत रत्न! अब मुझको सिर्फ इसको तोड़ना है और इसमें कैद ऊर्जा के बाहर निकलते ही नागों की काली शक्ति के साम्राज्य की पृथ्वी पर नींव पड़ जाएगी!

उस अद्भुत रत्न के धरती से टकराने पर जो भी हो सकता था-
-वह हुआ नहीं! क्योंकि वह रत्न धरती से टकरा नहीं पाया-
नागराज! तुम... तुम यहां पर कैसे आ गए?
तुम मेरा खजाना लूटने की कोशिश करो और मैं तुमको रोकने की कोशिश भी न करूं! ये तो नाइंसाफी है!
मुझे तुम्हारा खजाना नहीं, सिर्फ एक रत्न चाहिए था!
और वो अब तुम्हारे पास है! अब तुम या तो मुझे वह रत्न दोगे, या फिर अपनी जान!
और या फिर...
...दोनों!

तुम अगर मेरे बारे में पहले से जानते हो तो तुमको भी यह पता होगा कि मैं जान का सौदा नहीं करता! मैं न तो अपनी जान देता हूं और न ही किसी निर्दोष प्राणी की जान लेता हूं!

मैं सिर्फ बंदी बनाता हूं! अब बताओ! मेरे अमूल्य खजाने को छोड़कर तुमने इस रत्न पर ही हाथ क्यों साफ किया? क्या खास बात है इस रत्न में?

इस रत्न में नागों का पृथ्वी पर राज और मानवों का पृथ्वी पर से विनाश छुपा हुआ है!

और यह तो मैं भूल ही गया था कि इस काम के रास्ते में तुम सबसे बड़ी अड़चन हो नागराज!

बगैर तुमको खत्म किए हमारा मकसद पूरा नहीं हो सकता!

ओह! यह तो धुआं बनकर सर्प-कैद से बड़े आराम से आजाद हो गया!

इतनी ही आराम से तुम जिन्दगी की कैद से आजाद हो जाओगे नागराज!

ओह! यह धुआं! यह तो मुझे भी धुआं बनाता जा रहा है!

धूम्रधर की धूम्र शक्ति से तू भी नहीं बच सकता, नागराज! रत्न विशेषज्ञों की तरह तू भी धुआं बनकर हवा में उड़ जाएगा!
और पीछे रह जाएगा...
...वह रत्न जिसके लिए मैं यहां पर आया...
अरे! रत्न कहां गया?
ओफ़! शायद नागराज के साथ-साथ मैंने उसको भी धुएं में बदल दिया है! मुझको खुद ही अपनी नई शक्तियों की क्षमता का पता नहीं है!
मैं असफल हो गया। नागराज को मारकर भी मैं हार गया!
हार गया!
अरे
असफल होने पर इतने दुःखी मत हो धूम्रधर! रत्न नष्ट नहीं हुआ है! दरअस्ल तुम्हारे धूम्रवार से बचने के लिए मैं जब इच्छाधारी कणों में बदला था तो मेरे साथ-साथ वह रत्न भी इच्छाधारी कणों में बदल गया था!
तुम... तुम अभी तक जिन्दा हो, नागराज!
मेरे धूम्रवार को मात दे दी तुमने!
और तुमको कैद करने का रास्ता भी ढूंढ लिया है!

अब तुम धुएं में बदल कर भी इस कैद से छुटकारा नहीं पा सकोगे!

ओफ! इन सांपों की फौज तेजी से मेरे इर्द गिर्द चक्कर काटकर वायु का एक दाब-क्षेत्र पैदा कर रही है! मेरा धूम्ररूप हवा के इस दबाव को पार नहीं कर पाएगा!

और अगर ठोस रूप में पार करने की कोशिश करोगे तो ये नागफनी सर्प तुम को काटकर रख देंगे!

अब बताओ! क्या कर सकता है ये रत्न? नागों का राज इसके टूटने से कैसे स्थापित हो जाएगा?

बोल-बोलकर अपनी सांसों को खर्च मत करो नागराज!

वैसे भी तुम्हारे पास ज्यादा सांसें नहीं बची हैं!

धूम्रधर धुएं में बदलकर कोई भी रूप धारण कर सकता है! और वह रूप कट भी नहीं सकता! बस काट सकता है! तुम्हारे नागफनी सर्पों को भी!

ओफ़! इतनी घातक शक्तियों का मालिक जिस इकलौते रत्न को लेने आया है वह जरूर बहुत खास होगा! मुझको रत्न की जांच करवानी होगी! और अगर इसमें वाकई कोई ऐसी खतरनाक शक्ति कैद है जो मानवता का विनाश कर सकती है तो मुझको उसको नष्ट करना ही पड़ेगा!

पर इस रत्न को धूम्रधर के हाथों से बचा पाना मुश्किल है!

क्योंकि मैं खुद धूम्रधर की शक्तियों का जवाब नहीं दे पा रहा हूं!
बेकार कोशिशें मत करो नागराज! रत्न मुझे दे दो!
तुम मुझे तोड़ते जाओगे और मैं फिर से बनता जाऊंगा!
पर तुम टूटे तो फिर जुड़ नहीं पाओगे!
आऽऽऽह!
मैं इससे लड़कर गलती कर रहा हूं!
मेरा पहला उद्देश्य इस रत्न को बचाना होना चाहिए!
और उसके लिए मुझको पहले धूम्रधर को अपने रास्ते से हटाना होगा! पर जिसको मैं रोक तक नहीं सकता उसको भला रास्ते से कैसे हटाऊं?
हां! एक रास्ता नजर तो आ रहा है!
लेकिन उसके लिए इसको एक बार फिर धुएं में बदलने के लिए मजबूर करना पड़ेगा!
आओ, धूम्रधर! तुम रत्न लेने से पहले मुझको मारना चाहते हो न! आ जाओ! मार लो मुझे!
ये जरूर तुम्हारी कोई चाल है नागराज! तुम इतनी आसानी से मौत को गले लगाने वालों में से नहीं हो! पर मुझको तुम्हारी किसी भी चाल की परवाह नहीं है!

कहानी 19 पेज से जारी

क्योंकि धूम्रधर तेरी किसी भी चाल से निपट सकता है!
अरे कहां गया? फिर से इच्छाधारी रूप में बदल गया डरपोक!
इसको डरपोक होना नहीं समझदार होना कहते हैं धूम्रधर!
देखा न! तुम कांटों से दीवार में कैसे फंस गए?
तुम डरपोक होने के साथ-साथ बेवकूफ भी हो, नागराज!
नागराज ने लपककर उस स्विच को दबा दिया-
क्योंकि मुझको धूम्ररूप में बदलकर आजाद होने में एक पल भी नहीं लगेगा!
जैसे ही धूम्रधर ने धुएं का रूप धारण किया-
कट कट कट
आsss
जो उस पावरफुल एग्जास्ट सिस्टम को ऑन कर देता था, जिसे न्यूक्लियर बंकर की गंदी हवा को बाहर निकालने के लिए फिट किया गया था-
एग्जास्ट ने अंदर की हवा को शक्तिशाली खिंचाव के साथ खींचना शुरू कर दिया और साथ ही साथ धूम्रधर का धुएं से बना शरीर भी खिंचता चला गया-
अब जब तक ये संभल पाएगा...

तब तक मैं इस रत्न को लेकर...
...महानगर की 'मॉलिक्यूलर रिसर्च लैब' में पहुंच जाऊंगा-"
हैलो, प्रोफेसर!
अरे, नागराज! आओ! आज हमारी याद कैसे आ गई?
इस रत्न का 'मॉलिक्यूलर स्ट्रक्चर' चेक करना है, प्रोफेसर! और यह भी पता करना है कि इस रत्न में कोई ऊर्जा कैद है या नहीं!
यह तो मामूली सा काम है, नागराज! इस रत्न को 'इलेक्ट्रॉन एनालाइजर' के अंदर रखना है!
और कंप्यूटर स्क्रीन पर हमको इस रत्न की पूरी संरचना नजर आ जाएगी!
MANGNESE 2%
BARIUM ·05%
ONPINOR 1·07%
UNKNOWN 5%
UNKNOWN 8·7%
UNKNOWN ·2%
देखो इसमें मैंगनीज 2 परसेंट है, बेरियम ·05 परसेंट है और... और ये क्या है? अज्ञात तत्त्व 1 5 परसेंट, अज्ञात तत्त्व 2 6.7 परसेंट!
ये नहीं हो सकता! इस एनालाइजर में अब तक ढूंढे गए सारे तत्त्वों की डिटेल भरी हुई है! फिर ये अज्ञात तत्त्व कहां से आ गए? वह भी एक दो नहीं, पूरे दस हैं! एनालाइजर खराब हो रहा है!
नहीं, प्रोफेसर! विज्ञान को अभी बहुत कुछ ढूंढ़ना बाकी है! एनालाइजर गलती नहीं कर रहा है! अब ये पता कीजिए कि इसमें कोई ऊर्जा कैद है या नहीं?

और... व्हाट? ये तुम क्या चीज ले आए हो, नागराज? लेसर किरणें भी इसको भेद नहीं पा रही हैं! इसका खोल किसी अद्भुत मिश्रण का बना है!

फिलो इस रत्न को किसी ऐसी जगह पर ले जाकर छुपाना होगा, जहां पर इसको किसी खतरे की परछाईं तक न छू सके!

कैसा खतरा? ओह समझा! ये रत्न इतना रहस्यमय है तो इसकी कीमत भी करोड़ों में होगी!

करोड़ों में नहीं, अरबों में है!
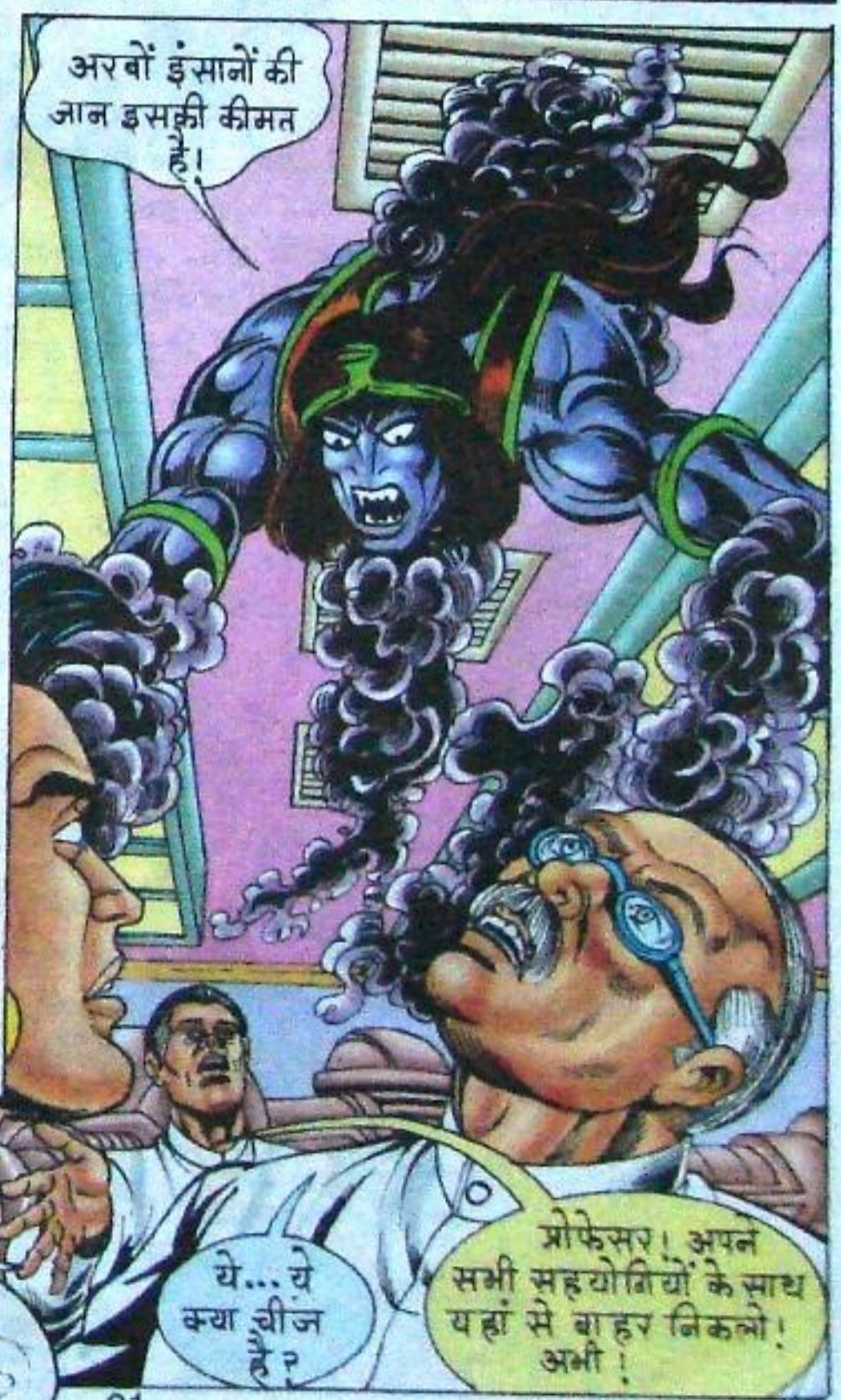
अरबों इंसानों की जान इसकी कीमत है!

धूमधर! मुझको उम्मीद नहीं थी कि ये इतनी जल्दी यहां पर पहुंच जाएगा!

ये... ये क्या चीज है?

प्रोफेसर! अपने सभी सहयोगियों के साथ यहां से बाहर निकलो! अभी!

तुम न भी कहते तो भी मैं यही करता, नागराज! भागो!
बस! अब मैं इस हॉल को सील कर रहा हूं!
अब यहां से जब मैं बाहर जाऊंगा तो मेरे हाथ में ये रत्न होगा!
और तुम्हारी लाश यहां पर पड़ी होगी!
रत्न को छुपाने की बात तो छोड़ो, तुम खुद भी मुझसे अब छुप नहीं सकते!
रत्न अगर इस कक्ष से बाहर नहीं जा सकता तो ये यहीं पर रहेगा! और यहां पर इसको छुपाने की हजारों जगहें हैं!
पर उनमें से एक भी स्थान ऐसा नहीं होगा जहां पर मैं मौजूद न होऊं!
मेरे अंग धुंआ बनकर इस हॉल में चप्पे-चप्पे पर फैले हुए हैं!
ओफ्! इसके अनगिनत हाथ मुझको जकड़ने की कोशिश कर रहे हैं! रत्न को सुरक्षित रखना और धूम्रधर पर काबू पाना, ये दोनों काम मैं एक साथ नहीं कर सकता! मुझको ये काम एक-एक करके करने होंगे!
सबसे पहले मुझे रत्न को धूम्रधर की पहुंच से दूर करना होगा! और इस वक्त रत्न को छुपाने की मुझको एक ही जगह समझ में आ रही है!

इस बार मैं तुमको नागों की वायु कैद में बंद नहीं कर सकता, धूम्रधर! क्योंकि तुम चारों तरफ फैले हुए हो!

पर मैं वायु कैद को 'वायु कवच' बनाकर तुम्हारे धूम्रवारों से आराम से बच सकता हूं!

पर अब तुम नहीं बच सकते!

ओ, ध्वंसक सर्प! इनके धमाके मेरे धूम्र शरीर को नुकसान नहीं पहुंचा सकते!

पर हां! इस प्रयोगशाला में आग लगाकर तुमको जरूर भस्म कर सकते हैं!

तुम सही कह रहे हो धूम्रधर! मेरा मकसद इस लैब में आग लगाना ही है!

क्योंकि आग लगते ही इस लैब में लगे 'हीट सेंसर' गर्मी को महसूस करेंगे...

और इस लैब में आग बुझाने के लिए लगा 'स्प्रिंकलर सिस्टम' चालू हो जाएगा, और पानी की फुहारें तेरे शरीर के धूम्र-कणों को अपने अंदर समेटकर नाली में बहा देंगी!

तुम कणों में विखंडित होकर वहीं पर पहुंच जाओगे जो तुम्हारे लिए बिल्कुल सही जगह है, गटर!

आऽऽऽह! पानी सचमुच मेरे कणों को घोल रहा है! और अपने शरीर को इतना फैला लेने के कारण मैं ठोस रूप में नहीं आ सकता!

ये पानी मुझको बहा ले जाएगा! और मेरे साथ-साथ नागों के साम्राज्य की संभावना भी मिट जाएगी!

म... मैं रत्न हासिल नहीं कर पाऊंगा! पर मेरा मकसद रत्न को हासिल करना नहीं, तोड़ना है!

और ये काम मैं अभी भी कर सकता हूं! मुझको बेबस समझकर नागराज ने अपना 'वायु कवच' हटा लिया है!

और ये गलती इसको बहुत भारी पड़ने वाली है!

लड़ाई तब तक खत्म नहीं होती जब तक जीत या हार का निर्णय न हो जाए।

और नागराज इस बात को बड़े दर्दनाक तरीके से समझने वाला था-
पेट पर पड़े उस भीषण वार ने रत्न को नागराज के पेट के अंदर ही तोड़ डाला था-
धूम्रधर खत्म तो हो रहा था, पर उसने अपना मकसद पूरा कर लिया था-
धड़ाम
कड़ाक
कककक
और रत्न में कैद ऊर्जा नागराज के शरीर के हर रास्ते से बाहर निकल रही थी-
नागराज यह लड़ाई जीतकर भी हार गया था-

क्योंकि धुव्रधर के साथ-साथ वह भी मौत की तरफ धीरे-धीरे बढ़ रहा था-

आऽऽऽह!

और उसको इस बात का कतई आभास नहीं था कि रत्न की ऊर्जा ने वायु में एक नए और रहस्यमय आयाम का द्वार खोल दिया है-

और उसके शरीर को अंजान शक्तियां उस द्वार के अंदर खींच रही हैं-

कुछ ही पलों के अंदर नागराज बगैर कोई निशान छोड़े इस दुनिया से गायब होजाने वाला था-

लेकिन नागराज की किस्मत भी उसके साथ थी-

और उसके दोस्त भी-

आऽऽह! ये क्या हो रहा है? किसने बचाया मुझको?

त... तुम? इतने सालों के बाद!

कपाल कुण्डला के बारे में जानने के लिए पढ़ें : शाकूरा का चक्रव्यूह

लेकिन कभी- कभी इन आयामों के बीच में 'समय द्वार' खुल जाते हैं, और एक आयाम की शक्तियां दूसरे आयाम में पहुंच जाती हैं!
ये समय द्वार भी ऐसा ही था जो तेरहवें आयाम से हमारे सातवें आयाम में खुल रहा था! पर मुझे सही समय पर इसका आभास हो गया, और मैंने यहां पर आकर इसको सील कर दिया! कुछ समझे नागराज! अब आओ?
कुछ समझा और कुछ नहीं समझा! पर इतना तो बता दो कि तुमको इस घटना का आभास कैसे हुआ और इस तेरहवें आयाम में कौन सी ऐसी खतरनाक शक्ति है जो मानवों का विनाश कर सकती है!
हालांकि मैंने समय द्वार को बंद कर दिया है और वह खतरा टल गया है, लेकिन फिर भी मैं तुमको बताती हूं! सुनो!
इस तेरहवें आयाम में जो काली नाग शक्ति कैद है उसका नाम मेड्यूसा है! उसको तुम इस संसार में मौजूद सभी काली नाग शक्तियों की माता कह सकते हो!
पौराणिक काल में इसने पृथ्वी पर जो विनाशलीला मचाई थी उसका ग्रीक देवराज ज्यूस के पुत्र हर्कुलिस ने अंत किया था जो आधा इंसान और आधा देवता था! मेड्यूसा के चेहरे को देखते ही कोई भी इंसान पत्थर का बन जाता था। हर्कुलिस ने अपनी ढाल में उसकी परछाई को देखकर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया था!
मेड्यूसा अविनाशी थी! यह बात हर्कुलिस जानता था! जब तक सिर और धड़ अलग रहते सिर्फ तभी तक मेड्यूसा मृतक के समान थी! इसीलिए हर्कुलिस ने मेड्यूसा के सिर और धड़ को अलग-अलग स्थानों पर दफना दिया था! और कब्र के ऊपर पत्थर रखने के बजाय एक पूरा पहाड़ रख दिया था!
लेकिन होनी को तो पहाड़ भी नहीं रोक सकते!

सदियों तक मैड्यूसा शांत सोई रही! और फिर एक दिन एक भीषण भूकंप ने उस क्षेत्र को हिलाकर रख दिया जहां पर मैड्यूसा दफन थी! और इस भूकंप ने धरती के हिस्सों को हिलाकर मैड्यूसा के सिर और धड़ को फिर से आपस में मिला दिया! मैड्यूसा एक बार फिर जी उठी थी!
मैड्यूसा का कहर एक बार फिर मानवता पर बरसने लगा!
पूरी दुनिया के मानवों को पत्थर की मूर्तियों में बदलते हुए वह भारत की धरती पर आ पहुंची और यहां पर उसका सामना हो गया तांत्रिकाचार्य स्वामी अघोरनाथ से।
और इस बार उसको रोकने के लिए हर्कुलिस नहीं था!
उनकी तांत्रिक शक्ति के सामने मैड्यूसा टिक नहीं पाई! पर समस्या फिर वही थी! मैड्यूसा अविनाशी थी!
तब उन्होंने एक अद्भुत कार्य किया! उन्होंने मैड्यूसा के चेतनस्वरूप को उसके शरीर से अलग कर दिया! और उसको तेरहवें आयाम में भेजकर कैद कर दिया, और समय द्वार को सील कर दिया!
तुम्हारे दुश्मन ने जिस रत्न को तुम्हारे पेट में तोड़ा था वह उस समय द्वार पर लगी सील थी!
उस सील को तोड़ने से समय द्वार भी खुल गया था और मैड्यूसा की काली शक्तियां तुमको अंदर खींचने लगी थीं!
कहानी तो रोमांचक है! पर इस कहानी से तुम्हारा क्या संबंध है!

मैं उन्हीं तांत्रिक स्वामी अघोरनाथ की वंशज हूं! मैडूयूसा पर एक नजर रखने का कार्य हम पुश्त दर पुश्त देखते आ रहे हैं! बस यह मुझको नहीं पता है कि वह सील बीच के समय में कहां पर खो गई थी!

वह रत्न यानी सील मेरे वंश के राजखजाने में पहुंच गई थी!

और वहीं से यह शख्स धूम्रधर उसको चुरा लाया था! बस यह मत पूछना कि यह धूम्रधर कौन था? क्योंकि मुझको यह नहीं पता!

नहीं पूछूंगी!

राजनगर का नेशनल म्यूजियम-

कमाल है! लोग कबाड़ी के धंधे को नीची नज़र से देखते हैं और खुद सदियों पुराने कबाड़ को देखने के लिए टिकट लेकर आते हैं!

उससे भी ज्यादा आश्चर्य की बात है इन कबाड़ों की कीमत अरबों में है! और इसकी सुरक्षा के लिए हम जैसे गार्डों को मोटी तनख्वाहें भी दी जाती हैं!

और साथ में सालों साल की बोरियत भी! आऽऽऽह!

मैं यहां पर बस ये देखने आई थी मैडूसा कि दस हजार साल पुराना तेरा सूखा शरीर अभी तक सलामत है या नहीं!
शायद तेरे पापों की यही सजा है! अनंतकाल तक तेरहवें आयाम में भटकते रहना! न तू मरेगी न तेरा शरीर गलेगा और तू अनंतकाल तक दुख भोगती रहेगी!
अब इस जन्म में शायद तुमसे दुबारा मुलाकात नहीं होगी! अलविदा मैडूसा!
10.000 A.D
लेकिन कपाल कुंडला के लिए अभी अलविदा कहने का वक्त नहीं आया था-
MACEDONIAN SOLDIER
150 B.C
आहा! हालांकि यहां स्मोकिंग बैन है लेकिन एक सुट्टा मारने में भला क्या जाता है!
यहां मुझको देखने वाला है ही कौन?
धुआं बंद! अच्छा नहीं लगता मुझे!
अक्! अक्!
ब... बचाओ!
इस मूर्ति में भूत घुस गया है!
ब... चा... ओ...
कुछ गड़बड़ है! मुझको मैडूसा की शक्तियों का आभास हो रहा है!

कहानी 35 पेज से जारी

वह दृश्य कपाल कुंडला तक के होश उड़ा देने के लिए काफी था-
धड़ाम
हे भगवान! एक चलती-फिरती पत्थर की मूर्ति! और यह इधर ही बढ़ रही है!
संग्रहालय के ममी- आग की तरफ!
मैं समझ गई कि ये क्या हो रहा है! समय द्वार पर मेरे द्वारा लगाया गया अवरोध स्वामी अघोर नाथ के अवरोध जितना शक्तिशाली नहीं था! मैड्यूसा की शक्ति द्वार के पार आ रही है!
ये मूर्ति भूतकाल में मैड्यूसा द्वारा पत्थर में बदला गया कोई सैनिक है! मैड्यूसा की शक्ति ही इसको चला रही है!
और मुझको पूरा विश्वास है कि मैड्यूसा ने इसको खुद को लाने का आदेश दिया है!
अपने ममी हो चुके शरीर को लाने का आदेश!

और मैं ऐसा नहीं होने दे सकती! मुझे मेड्यूसा के शरीर और धड़ को अलग करके मेड्यूसा की जिन्दा होने की किसी भी कोशिश को रोकना होगा!
और इसके लिए मुझको इस मूर्ति से पहले मेड्यूसा के शरीर तक पहुंचना होगा!
कपाल कुंडला की कोशिश तो समझदारी भरी हुई थी-
लेकिन मेड्यूसा की काली शक्ति उसकी इस चाल को भांप गई थी-
उसने कपाल कुंडला का रास्ता काट दिया था-
और अब उसकी कोशिश कपाल कुंडला की जीवन रेखा को काटने की थी-
आऽऽऽह! ये सैनिक मनों वजनी जरूर है लेकिन ये जानता नहीं है कि ये किससे उलझ रहा है!
मैं इसको इतने टुकड़ों में बिखेर सकती हूं जितने साल इसने पत्थर बनकर गुजारे हैं!
कपाल कुंडला से टकराओगे तो चूर-चूर हो जाओगे!

अब इससे पहले कि मेड्यूसा कोई और चाल चले, मुझे उसका सिर धड़ से अलग करके यहां से दूर ले जाना है!
कपाल कुंडला बड़ी आसानी से यह लड़ाई जीत गई थी-
और इस जीत ने उसको अति आत्मविश्वास से भर दिया था-
और जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास हमेशा घातक होता है-
अब इसको रोकूं कैसे? यह तो मैंने कभी सोचा ही नहीं था कि मुझे कभी किसी मूर्ति को चलने से भी रोकना पड़ सकता है!
इसीलिए मैंने कभी ऐसे तंत्र को सीखने का प्रयास ही नहीं किया!
मैं इसको सिर्फ तांत्रिक वारों से तोड़ सकती हूं, और उससे कोई फायदा नहीं होने वाला है!
आऽऽऽह! जैसे मेड्यूसा गर्दन कटने से भी मरती नहीं है, वैसे ही उसकी शक्ति से चलने वाली मूर्ति भी टूटने से नष्ट नहीं होती है!
क्योंकि मैं तोड़ती जाऊंगी और ये जुड़ता जाएगा। अगर मैं पलभर के लिए भी इससे पीछा छुड़ा पाती तो मेड्यूसा के मर्मी शरीर को यहां से लेकर भाग खड़ी होती!
किस्मत कपाल कुंडला के साथ थी-
ये पत्थर की मूर्ति बहुत धीरे चलती है! ये मेरा पीछा नहीं कर पाएगी!
क्योंकि मूर्ति के वार ने अलार्म को बजा दिया था-

और म्यूजियम के सिक्योरिटी गार्डों की टीम ने वहां तक पहुंचने में जरा भी समय नहीं लगाया था-
ये... ये असंभव है! ये तो प्राचीन काल के योद्धा की मूर्ति है! पर... पर यह चल कैसे रही है?
ये तो जादू है! या इस मूर्ति में भूत-बूत घुस गया है!
डराओ मत यार! ये बताओ, भागना है या लड़ना है!
FOSSILS
नौकरी बचानी है तो लड़ना ही पड़ेगा!
भूख से मरें या इसके हाथों से बात तो बराबर ही है!
तो फिर डालो बंदूक में बड़ी वाली गोलियां!
और तोड़ डालो इस मूर्ति को!
शूट स्ट विल!
गार्डों ने मूर्ति का ध्यान खींच लिया था-
और कपाल कुंडला को वह मौका मिल गया था जिसकी उसको तलाश थी-
यहां पर एक पल भी रुकना खतरनाक होगा! अगर गार्डों ने मुझको देख लिया तो वे मुझे भी मूर्ति का साथी समझेंगे! मैड्यूसा के शरीर को पहले यहां से दूर ले जाना होगा!
धड़ाक
ताकि मैं आराम से तांत्रिक क्रियाओं के द्वारा मैड्यूसा के सिर और धड़ को अलग करके उनको दुनिया के दो अलग-अलग हिस्सों में दफना दूं!
ताकि मैड्यूसा फिर कभी न उठ सके!
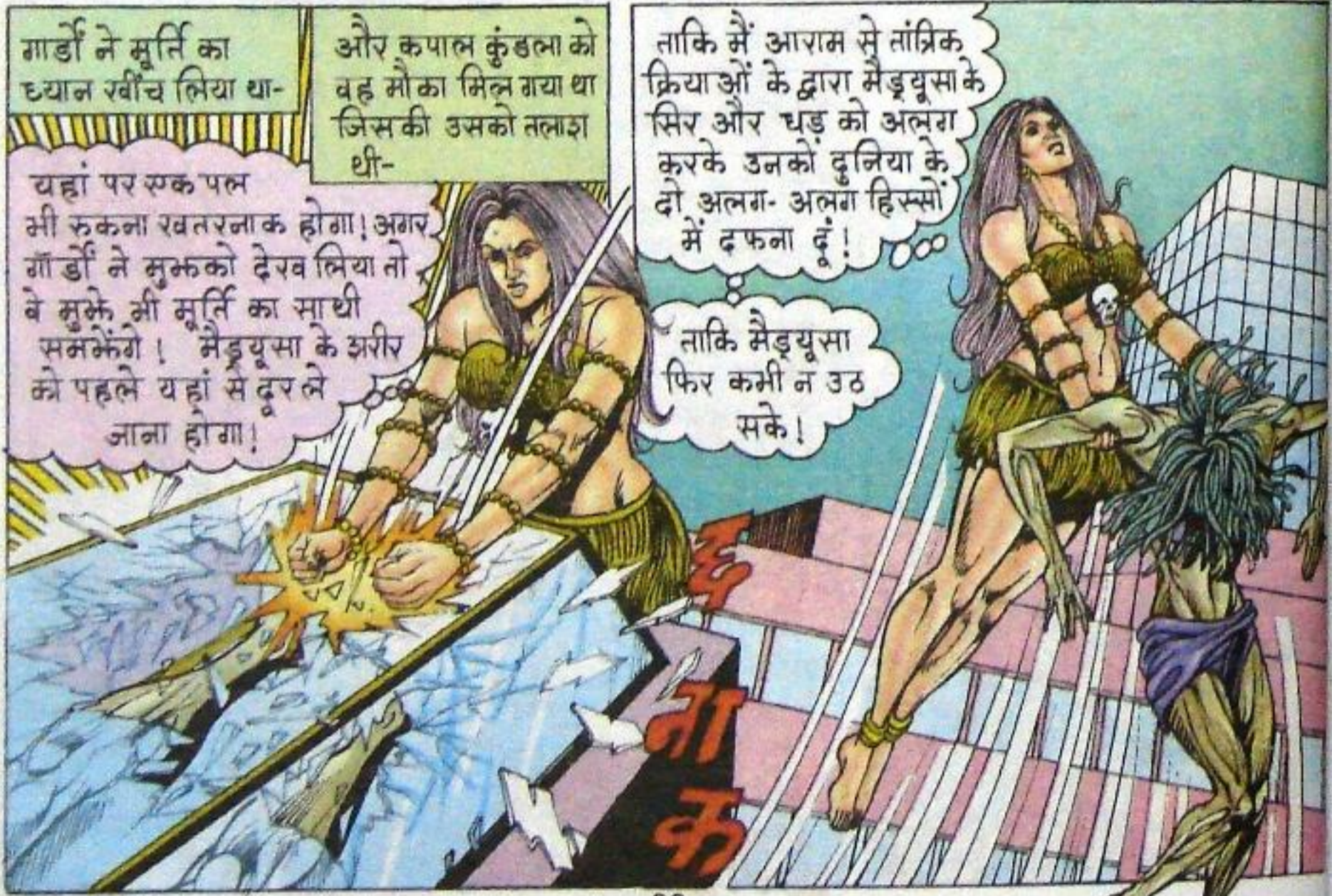
अब यहां पर मैं आराम से इसके सिर और धड़ को अलग कर सकती हूं और दोनों हिस्सों को अलग-अलग दफन कर सकती हूं! और मेडूयूसा की गुलाम पत्थर की वह मूर्ति समय रहते मेरा रास्ता रोकने के लिए नहीं आ सकती!
कपाल कुंडला का ख्याल सही था-
मूर्ति उसको रोकने के लिए नहीं आ सकती थी-
लेकिन, उसको रोकने वाले और भी थे-
आऽऽऽह! ये सांड कहां से आ गया? और इसने मुझको टक्कर क्यों मारी? मैंने तो लाल कपड़े भी नहीं पहने हुए हैं!
इसको ऐसा करने के लिए मैंने कहा था!
क्योंकि आमतौर पर मैं महिलाओं पर हाथ नहीं उठाता!
तुम जानवरों से बात कर सकते हो? कौन हो तुम?
लोग मुझको सुपर कमांडो ध्रुव कहते हैं! पर सवाल यह है कि दस हजार साल पुरानी बेशकीमती ममी के टुकड़े करके तुम आखिर चाहती क्या हो?
तुम सबकी भलाई!
या अपनी भलाई?
तुम जरूर इस ममी के सहारे कोई तांत्रिक शक्ति पाना चाहती हो!

मेरे पास पहले से ही काफी तांत्रिक शक्तियां हैं! अब मेरे काम में टांग अड़ाने का इरादा छोड़ दो और अपने दोस्त जानवरों से बातें करो!
ओह! इसने मुझको अदृश्य दीवारों वाली किसी कैद में बंद कर दिया है! मैं बाहर नहीं निकल पा रहा हूं!
अब मैं आराम से मेड्यूसा के टुकड़े कर सकती हूं! अरे! मेड्यूसा कहां गई?
ओह! इसको पक्षी उठाकर ले जा रहे हैं!
मेड्यूसा की सदियों से सूख रही ममी अवश्य काफी हल्की हो गई होगी!
यानी ये लड़का पक्षियों से भी बात कर सकता है! पर ये पक्षी मुझसे दूर नहीं भाग सकते हैं!

क्योंकि कपाल कुंडला को भी आकाश मार्ग पर चलना आता है!
कपाल कुंडला एक ही छलांग में मेड्यूसा तक पहुंच गई थी-
लेकिन फिर भी उसके हाथ मेड्यूसा तक नहीं पहुंच पाए-
क्योंकि किसी चीज ने उसके पैरों को थाम लिया था-
तुम मेरी तांत्रिक कैद से बाहर आ गए। पर कैसे? मेरी कैद से तो आज तक कोई भी आजाद नहीं हो पाया है!
और अब मैं खुद इस ममी को म्यूजियम तक पहुंचाने जा रहा हूं!
और ये चीज स्टार लाइन थी-
मैं भी नहीं हो पाता! अगर मेरे साथ-साथ तुमने एक मेनहोल को भी कैद न कर दिया होता।
मैं मेनहोल के रास्ते आराम से बाहर आ गया।
ये मेड्यूसा को वापस संग्रहालय की तरफ ले जा रहा है, और वहां पर मेड्यूसा की गुलाम मूर्ति उसका इंतजार कर रही होगी!

मुझे इसको यहीं पर रोककर मेडूयूसा के शरीर को हासिल करना ही होगा!
स्टार लाइन एक मामूली से तांत्रिक वार से ही टूट गई-
और कपाल कुंडला आजाद हो गई-
बस! अब तुम और आगे नहीं जा पाओगे!
तुम्हारे मामूली वार मेरे लिए मच्छर के डंक से ज्यादा और कुछ नहीं हैं जो खून की एक बूंद को खींचने में सारी रात लगा देते हैं!
और एक ममी दूसरी ममी को थाम नहीं सकती!
लाओ! इसको मुझे दे दो!
पर मेरा वार तुम्हारा सारा खून कुछ पलों में सुखा-कर तुमको खुद एक ममी बना देगा!
ओम् ह्रीम क्लीम चामुंडाय नमो नमः
आऽऽह! ये कमजोरी! थकान लग रही है, और चक्कर भी आ रहे हैं! मुंह सूख रहा है!
मुझको जान लेने का शौक तो नहीं है, लेकिन इसके अलावा मेरे पास और कोई रास्ता नहीं है!
तुम्हारी जान से ज्यादा कीमती मेरा वह समय है जो तुम बर्बाद कर रहे हो!

आऽऽऽह! तांत्रिक शक्तियों का मेरे पास कोई जवाब नहीं है! क्योंकि... ये शक्तियां विज्ञान के नियमों को नहीं मानतीं!
उनको नियंत्रित करता है इंसान का दिमाग...
एक काम मैं अभी भी कर सकता हूं! बस उसके लिए मुझको जरा सी शक्ति इकट्ठी करनी होगी!
ध्रुव ने अपने मरी होते शरीर की बची खुची शक्ति को इकट्ठा किया-
और कपाल कुंडला के पैरों से एक बार फिर स्टार लाइन आ लिपटी-
दूर हट मुझसे!
मैं एक साथ दो मणियां नहीं उठा सकती!
लेकिन इससे पहले कि कपाल कुंडला अपने हाथों को खाली करके स्टार लाइन को तोड़ पाती-
ध्रुव का सूखता शरीर अपनी आखिरी कलाबाजी खा चुका था-
स्टार लाइन का दूसरा हिस्सा हाई टेंशन केबिल से लिपट चुका था-
और उसमें से होकर दौड़ती हुई बिजली कपाल कुंडला के शरीर तक पहुंच गई थी-
आऽऽऽह! ये झटके! मेरा ध्यान भंग हो रहा है! मैं मैड्यूसा को थाम नहीं पा रही हूं!
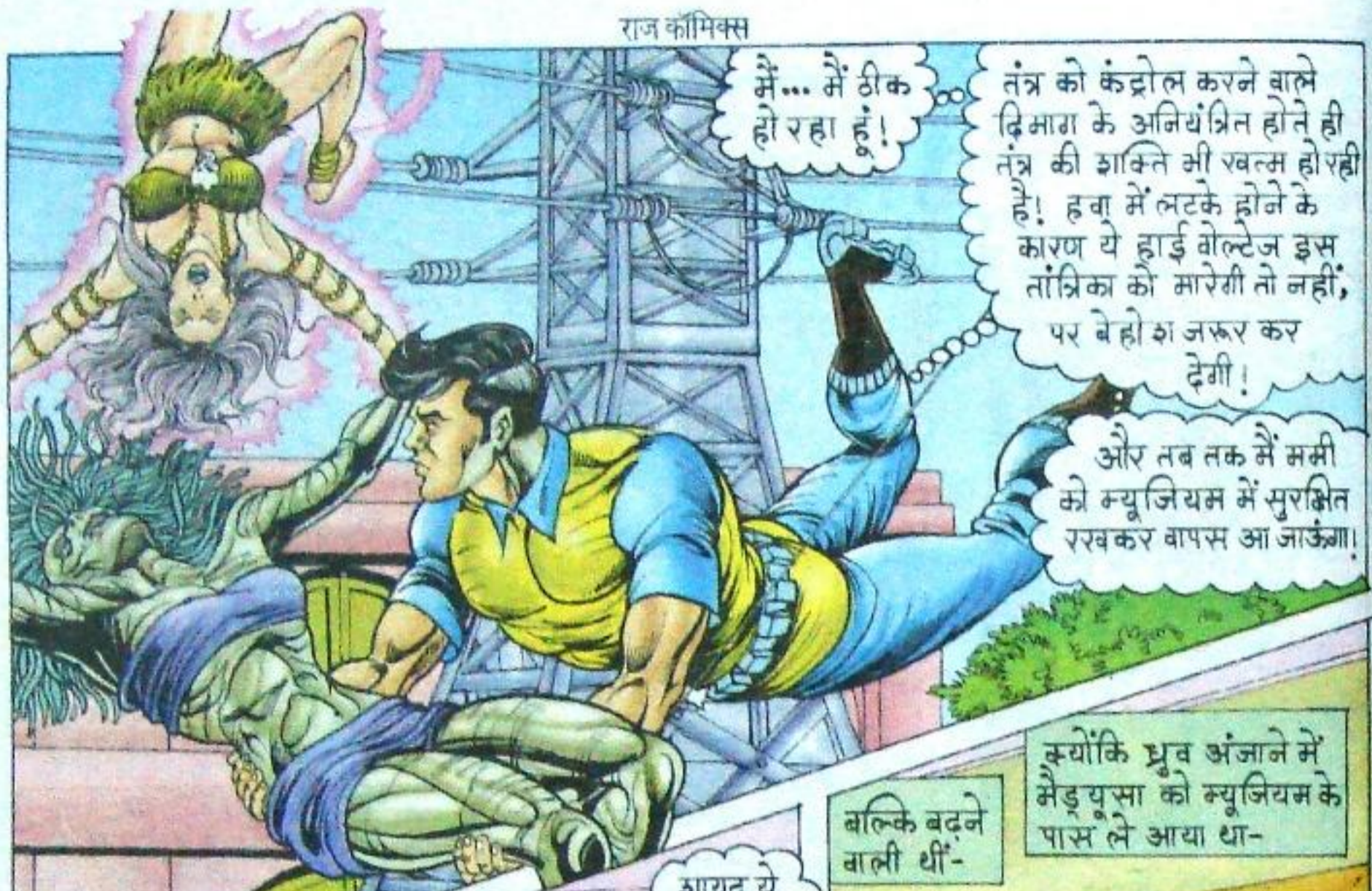
मैं... मैं ठीक हो रहा हूं!
तंत्र को कंट्रोल करने वाले दिमाग के अनियंत्रित होते ही तंत्र की शक्ति भी खत्म हो रही है! हवा में लटके होने के कारण ये हाई वोल्टेज इस तांत्रिका को मारेगी तो नहीं, पर बेहोश जरूर कर देगी!
और तब तक मैं ममी को म्यूजियम में सुरक्षित रखकर वापस आ जाऊंगा।
और तब मैं इस तांत्रिका से जानने की कोशिश करूंगा कि आखिर ये इस ममी के जरिए क्या करना चाहती थी!
वह रहा म्यूजियम!
लेकिन यहां पर अभी भी भगदड़ क्यों मची हुई है!
शायद ये खोई हुई ममी को ढूंढ रही है!
RAJNA HISTORYMUSEUM
मैं अभी इनकी चिन्ता दूर कर देता हूं!
चिन्ताएं दूर होने वाली नहीं थीं-
क्योंकि ध्रुव अंजाने में मैडूसा को म्यूजियम के पास ले आया था-
बल्कि बढ़ने वाली थीं-
और ऐसा करके उसने पूरी दुनिया के साथ-साथ...

अपनी जान को भी खतरे में डाल दिया था! क्योंकि मैड्यूसा की ममी फिलहाल उसके पास थी-
और सैन्य मूर्ति को सिर्फ उसी की तलाश थी-
व्हाट इज दिस? एक... एक मूर्ति चल रही है!
यानी भगदड़ इसी के कारण थी, ममी के कारण नहीं!
ओह! अब मैं समझा। वह तांत्रिका, जिसको मैं उल्टा लटकाकर आया हूं! जरूर उसी ने अपनी तंत्र शक्तियों से इस मूर्ति को चलाया होगा, और भगदड़ का फायदा उठाकर ममी को ले उड़ी होगी!
पर अब वह बेहोश है! और इस मूर्ति को विनाश करने से सिर्फ वही रोक सकती है! परन्तु फिलहाल ये काम मुझको ही करना पड़ेगा!
लेकिन उससे पहले मुझे इस ममी को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना होगा!
ताकि ये इसके हाथों में न पड़ सकें!
और वह जगह यहां से दूर होनी चाहिए!

ध्रुव के स्थान पर उस मूर्ति को रास्ता रोकने के लिए भारी हथियारों से लैस एक्शन फोर्स घटनास्थल पर आ चुकी थी-

हमारे भारी हथियार भी इसके बढ़ते कदमों को रोक नहीं पा रहे हैं!

अब हम क्या करें? टैंक लाएं?

उससे भी जोरदार चीज है!

पर ये सवाल बरकरार था कि वे सफल हो पाएंगे या नहीं-

मैंने अपने और इसके बीच में लैंड माइंस बिछा रखी है! और अब ये अपना पैर उस पर रखने ही वाला है!

और माइन के दबते ही...

बडाम

...धमाका इसको पत्थर के चूरे में बदल देगा! देखो!

हा हा हा! हम जीत गए!

हम जीत... गए!

ये तो अविनाशी है! हम इस मूर्ति का विनाश नहीं कर सकते! मिलिट्री को बुलाओ!

पर मिलिट्री से भी बड़ी मदद घटनास्थल पर बस पहुंचने ही वाली थी-
पांच मंजिल ऊंची इस बंद फैक्ट्री की चिमनी के अंदर लटकी मैड्यूसा की ममी को कोई ढूंढ नहीं पाएगा!
अब मैं निश्चिन्त होकर उस मूर्ति को नष्ट करने के लिए कोई रास्ता सोच सकता हूं!
और फिर मैं उस तांत्रिका से इस सारे विनाश के कारण का पता करूंगा!

ध्रुव को अपनी योजना पूरी करने के लिए पहले सैन्य-मूर्ति को नष्ट करना जरूरी था-
और यह काम असंभव था-
INFLAMMABLE
और जिस पर रॉकेट तथा ग्रेनेड तक बेअसर हैं! उसको भला मैं कैसे रोक पाऊंगा!
हे भगवान! यह तो ऊपर की तरफ देखता हुआ उधर ही बढ़ रहा है, जहां पर मैंने ममी को लटका-कर रखा हुआ है!

यस! ये वार तो सौ ग्रेनेडों के बराबर हैं!
अब ये सैन्य-मूर्ति नहीं बचेगी!

अगले ही पल दो लाख लीटर ज्वलनशील द्रव से भरा वह टैंकर फुल स्पीड से सैन्य मूर्ति की तरफ बढ़ रहा था-
ROXIE
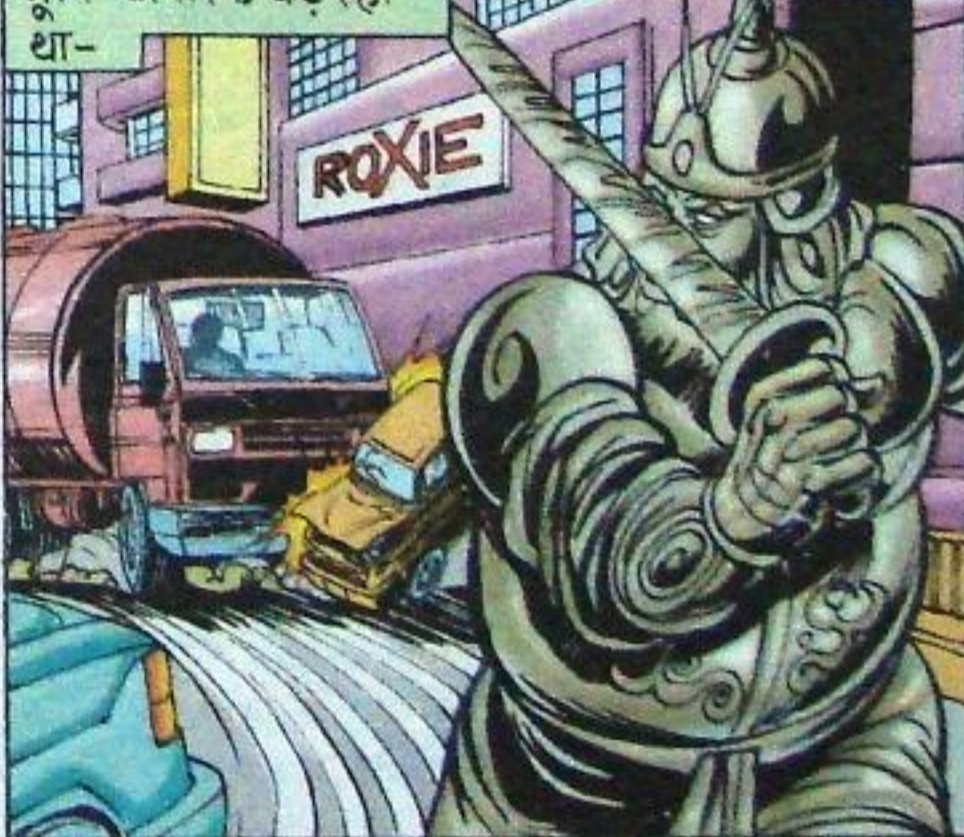
और मूर्ति में इतनी फुर्ती नहीं थी-

कि वह आग के उस विशाल गोले से बच सके-
बड़ाम
इस धमाके से तो कंक्रीट की इमारतें तक नहीं बच सकतीं!
फिर ये मूर्ति भला क्या बचेगी?
मैं ममी को तो अभी भी इससे दूर ले जा सकता हूं! लेकिन उससे फायदा क्या होगा?
ममी को पाने के चक्कर में यह मूर्ति विनाश फैलाती रहेगी!
ये जरूर टैंकर से तभी गिरा होगा, जब मैं नीचे कूदा था!
ये रोकेगा मूर्ति को! ये 'ड्राई आइस' यानी ठंडी तरल कार्बन डाइ आक्साइड गैस से भरा अग्निरोधक!
ओ गॉड! इसको... इसको तो कुछ भी नहीं हुआ!
और अब ये मेडूयुसा की ममी के और पास पहुंच गया है!
और जिस पर कोई वार असर न डाल रहा हो, उसको भला मैं कैसे रोक सकता हूं!
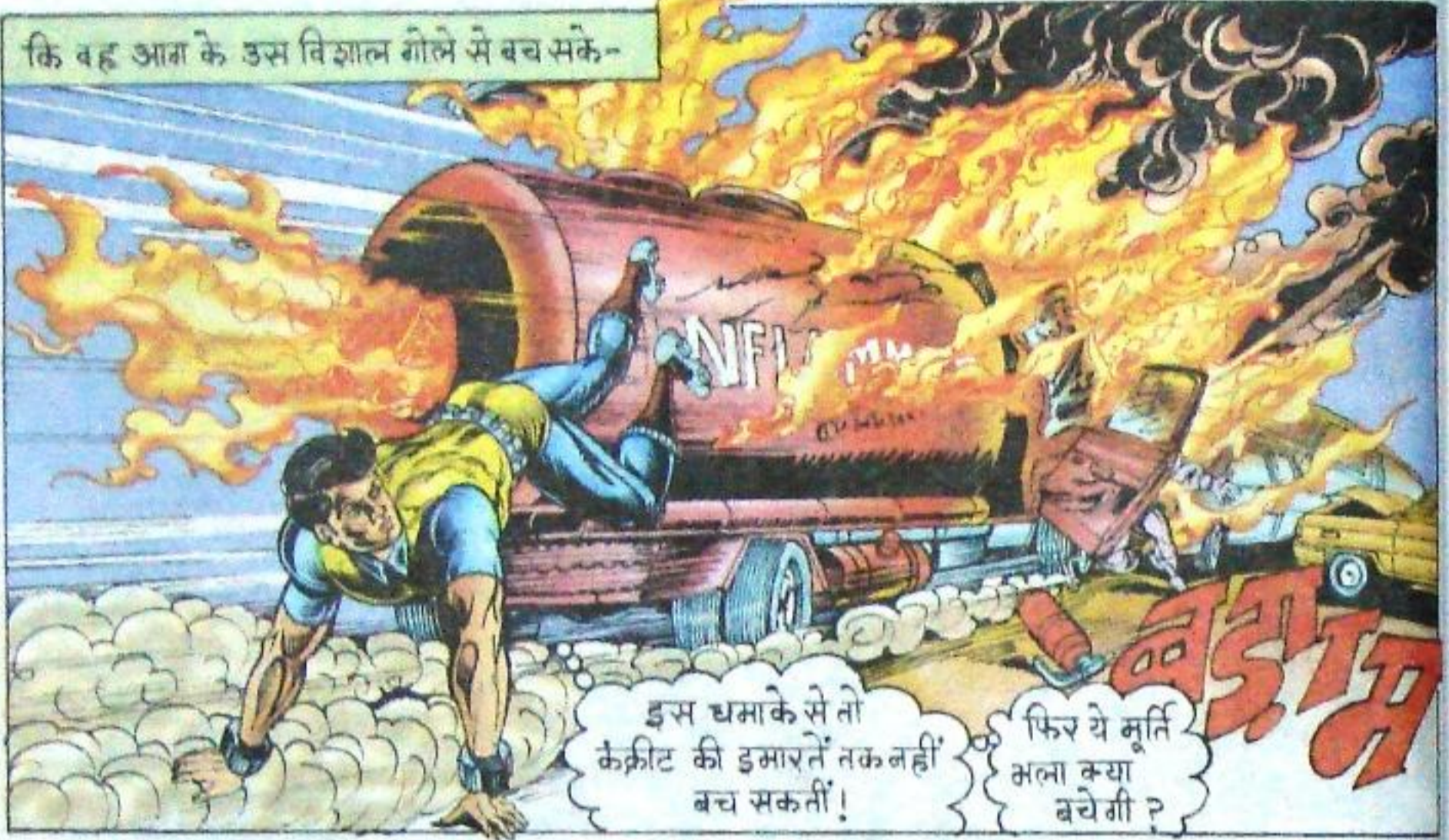
अरे! ध्रुव तुम इस शैतान की आग को बुझा क्यों रहे हो?
जलने दो इसको! शायद आग इसके शरीर को गला डाले।
आग इसको गला नहीं पा रही है!
वैसे भी मैं इसकी आग को बुझा नहीं रहा हूं!
इसके गर्म दहकते शरीर को जल्दी ठंडा कर रहा हूं!
ताकि मेरी एक ही किक इसको टुकड़ों में बिखेर सके!
धु
ड़ः
केक
रेगिस्तान ऐसे ही बनते हैं न! दिन की गर्म चट्टानें जब रात को अचानक ठंडी होती हैं...
...तो उनमें दरारें पड़ जाती हैं! और चट्टानों के टुकड़े होते रहते हैं!
ऐसे!
कमाल है ध्रुव! जिसको बम के गोले नहीं तोड़ पाए उसको तुम्हारी किक ने तोड़ दिया!
बारूदी हथियार इसके शरीर में दरारें नहीं डाल पा रहे थे! पर विज्ञान के सिद्धान्तों से ये बच नहीं पाया!
हैं!
अक्!
अरे, क्या हुआ? आप सबकी जुबानों पर ताला क्यों लग गया?

अगले ही पल- ध्रुव की जुबान को भी काठ मार गया-
धड़ाक
आऽऽऽह! ये तो फिर से जुड़ गया! यानी इसको नष्ट करना असंभव है! पर इसको रोकना तो होगा ही!
लेकिन चलती-फिरती मूर्ति को भला क्या चीज रोक सकती है! कौन सी चीज?
समझ गया!

मेरी योजना बन चुकी है! अब उसको पूरा करने के लिए मुझको वह ममी चाहिए!

क्योंकि इसको पाने के लिए यह मूर्ति बगैर कुछ सोचे समझे वैसे ही मेरे पीछे आएगी, जैसे हड्डी के पीछे कुत्ता आता है!
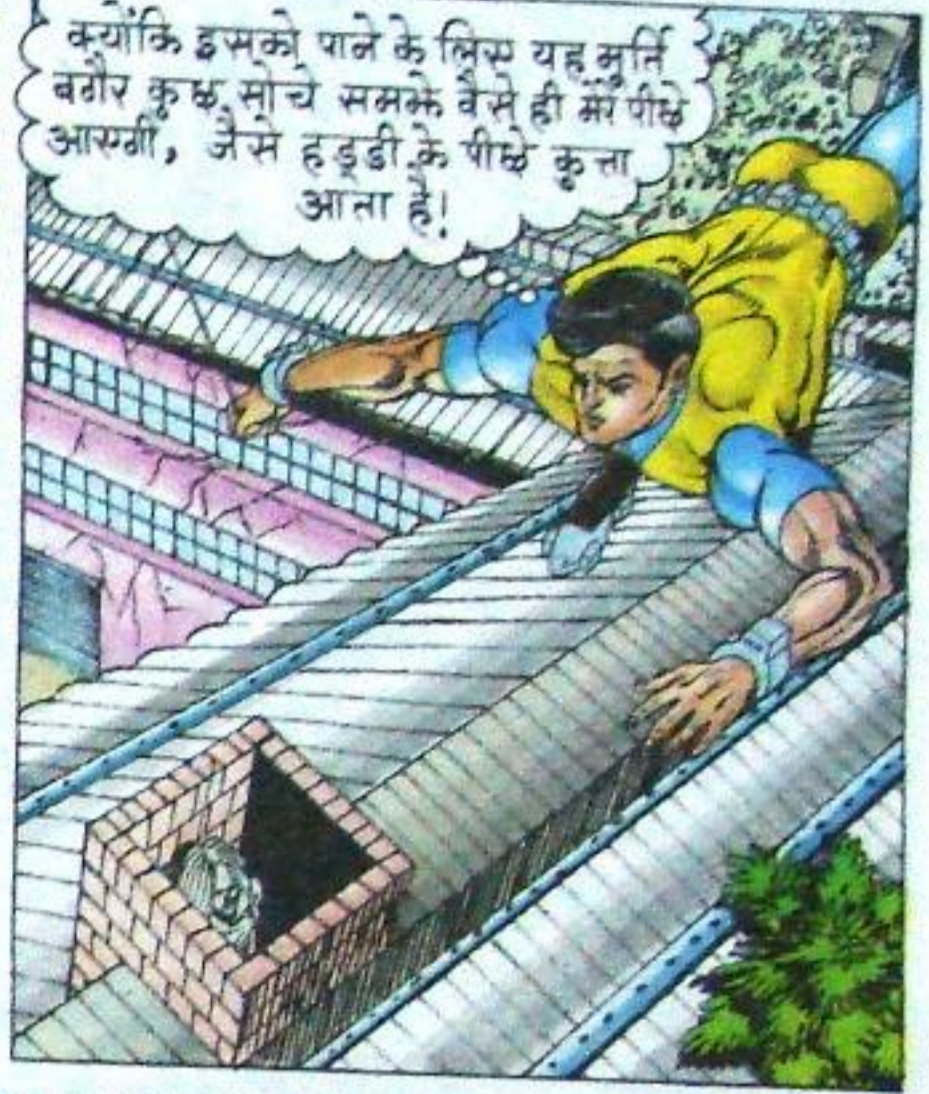
थोड़ी ही दूर पर-
मेट्रो-ट्रेक की फैक्ट्री में-
सर! मेट्रो रेल सेक्शन के 250 साइड स्लिपर तैयार हो गए हैं! अब हमको 700 स्लिपर और बनाने हैं! पर सीमेंट टैंक में इतनी सीमेंट नहीं है!
एक-दो घंटे में पचास ट्रक सीमेंट आ जाएगी! काम चालू रखो!
हमको लेट नहीं होना है! एक मिनट के लिए भी नहीं!

चाहे कुछ भी हो जाए! व्हाट!
पर मुसीबत कभी अकेली नहीं आती-

अपने भाई भतीजों को साथ लेकर आती है-
ओ माई गॉड! आप एक मिनट की बात कर रहे थे? यह तो पूरे महीने के काम का सत्यानाश कर देगा!
कम से कम ध्रुव जैसे जिम्मेदार नागरिक को तो हमारी परेशानी समझनी चाहिए!
न जाने वह इस अजीबोगरीब मुसीबत को यहां क्यों ले आया?
ध्रुव के हर काम में एक मतलब होता
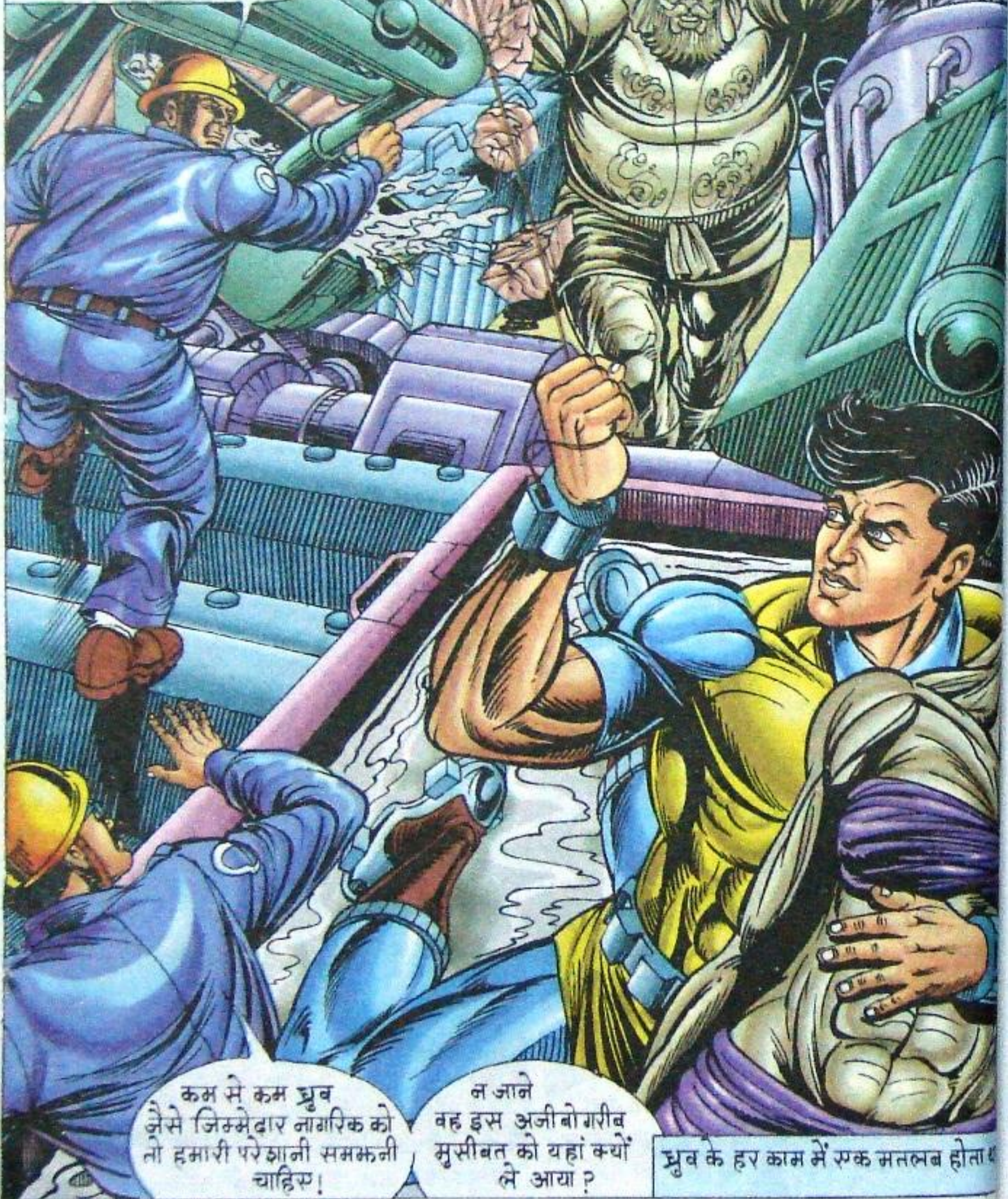
और ये मतलब जल्दी ही सबको समझ में आ जाने वाला था-
ध्रुव के पीछे बढ़ती सैन्य मूर्ति के पैरों के नीचे से एकाएक जमीन सरक गई-
क्योंकि उसने अपना पैर सीमेंट घोल से भरे टैंक पर रख दिया था-
और अब उसका छटपटाना भी उसको सीमेंट के दलदल में धंसने से नहीं बचा सकता था-
पर सैन्य मूर्ति के लिए जान उतनी कीमती नहीं थी जितना कि उसका मिशन-
तलवार का वार सीधा ध्रुव के हाथों पर लगा-
लेकिन मूर्ति के हाथों का ममी से संपर्क हो पाने से पहले ही-
ममी का संपर्क उस वार से हो गया, जिसने ममी के सिर को उसके धड़ से अलग कर दिया-
और ममी ध्रुव के हाथों से छूटकर मूर्ति की तरफ गिरने लगी-
हवा में उड़ता हुआ सिर किस तरफ गया, यह ध्रुव देख नहीं पाया था-
क्योंकि उसका सारा ध्यान धड़ पर था-
जो डूबती मूर्ति के हाथों से छूते ही अदृश्य होता आ रहा था-

ये... ये क्या? ममी कहां गायब हो गई?

इसका पता तो मैं लगा ही लूंगी! ममी के दो टुकड़े हो जाने से खतरा फिलहाल टल गया है!

अगर मैं वक्त पर न पहुंचती तो यह मूर्ति पूरी ममी हासिल कर लेती! और वह भी सिर्फ तुम्हारी वजह से!

इसका दंड तो तुमको भुगतना ही होगा!

तुम्हारी बातों से ऐसा लग रहा है कि तुम इस मूर्ति के साथ नहीं बल्कि इसके खिलाफ हो!

एक मिनट, एक मिनट!

मैं? इस मूर्ति के साथ? ये ख्याल भी तुम्हारे दिमाग में कैसे आया?

मैं तो इसको रोक रही थी।

फिर तो हम एक ही साइड पर हैं! गुड मैं अभी तुमसे बात करता हूं!

पहले 'क्विक ड्रायर' से इस सीमेंट को सुखा-कर ठोस कर दूं!

वैसे मूर्ति को कैद करने का तुम्हारा तरीका अच्छा था! पर ये ख्याल तुमको आया कैसे?

मूर्ति को सिर्फ एक ही जगह पर कैद किया जा सकता है! सांचे में! जहां पर उसको हाथ हिलाने तो क्या, पलक झपकाने की जगह न मिले! इसीलिए मैं मूर्ति को यहां ले आया, जहां पर इस मूर्ति के सांचे को बनाने का मैटीरियल एकदम तैयार था!

पर अब हम इस सीमेंट के क्यूब का क्या करें?

इसे छुइएगा भी मत! इसकी जगह सिर्फ एक ही है! समुद्र का तल! वहां पर ये सदियों तक सही सलामत पड़ा रहेगा!

अब बताओ! तुम हो कौन? और उस ममी के सिर और धड़ कहां गए?
धड़ का तो पता करना पड़ेगा! लेकिन सिर यहीं कहीं होगा! अभी ढूंढती हूं! शायद मेरा वार कुछ ज्यादा ही जोर से लग गया था!
पर तुम हो कौन?
कपाल कुंडला! और तुम?
ममी का धड़ यहां पर आ चुका था-
ओफ्! मंजिल मिल तो गई लेकिन अधूरी मिली है! तुझे माध्यम बनाकर मैंने अपनी जिस शक्ति को अपनी गुलाम मूर्ति तक भेजा था, वह तो कैद हो गई है, पर उसने तेरे माध्यम से मेरे धड़ को यहां पर प्रेषित कर दिया है!
लेकिन सिर जहां पर जाकर गिरा है उसको वहां से लाकर धड़ से जोड़ना है!
तभी मेरा काम पूरा हो पाएगा!
पता करना पड़ेगा कि सिर कहां पर जाकर गिरा है!
नई दिल्ली-
अब आपके इस्रायली डेलीगेशन को आतंकवादियों की धमकी का कोई खतरा नहीं है, राजदूत जी! हमारी सुरक्षा परमाणु जो कर रहा है!
और ये सुरक्षा F16 युद्धक विमान के सम्पूर्ण बेड़े से भी बढ़कर है!

अब हम सुरक्षित अपने देश की सीमा में ... ओऽऽऽ

ओ गॉड! प्लेन के पर से कुछ टकराया है! और पूरा पर टूटकर अलग हो गया है!

पर वह चीज अभी भी अपने रास्ते पर ही जा रही है! क्या है ये चीज?

बाद में देखूंगा! पहले तो मुझे प्लेन को सुरक्षित नीचे उतारना है!
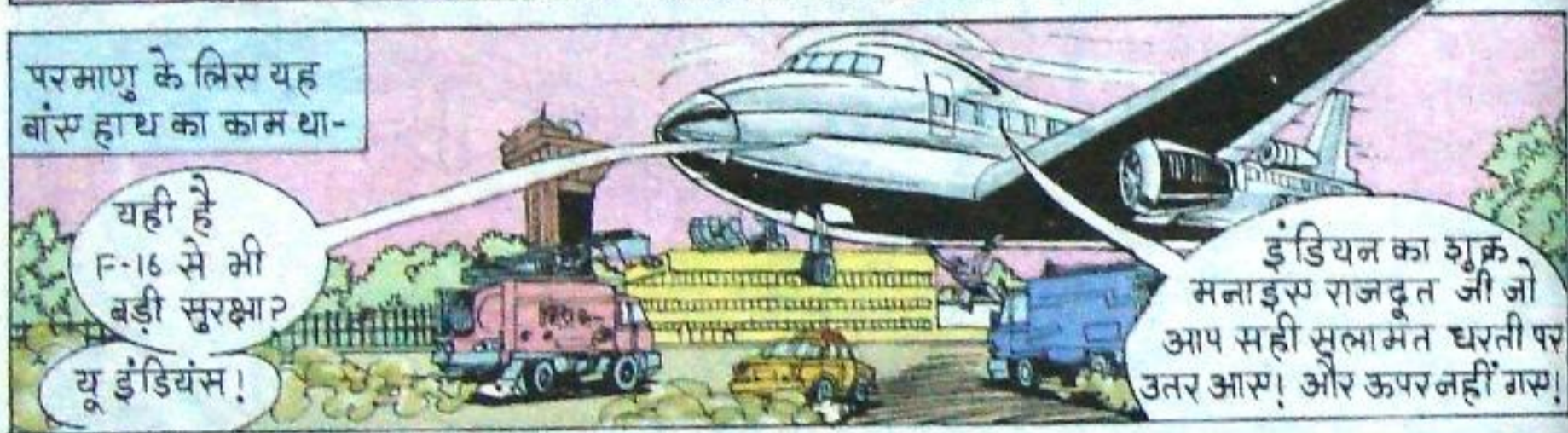
परमाणु के लिए यह बाएं हाथ का काम था-

यही है F-16 से भी बड़ी सुरक्षा?

यू इंडियंस!

इंडियन का शुक्र मनाइए राजदूत जी जो आप सही सलामत धरती पर उतर आए! और ऊपर नहीं गए!

अब मुझको देखना है कि वह चीज क्या थी?

वह रही। ये तो तेजी से पश्चिमी दिशा में जा रही है!

मुंबई की तरफ!

परमाणु के साथ-साथ कुछ और भी मैड्यूसा के सिर का पीछा कर रहा था-
और वह चीज थी, मैड्यूसा की नजर-
बहुत घातक तांत्रिक वार किया था उस कपालिनी ने मेरे शरीर पर! मेरा सिर अभी भी हवा में ही उड़ रहा है! पर मैंने अंदाजा लगा लिया है कि वह कहां पर जाकर गिरेगा!
तुझे मेरे शरीर को लेकर वहां पर जाना होगा! लेकिन इसके साथ-साथ मुझको ऐसा इंतजाम भी करना पड़ेगा कि वह सिर इस उड़न मानव के हाथ न लग जाए जो उसका पीछा कर रहा है! उसको रास्ते में ही रोकना होगा!
"जिनको भी मैंने पिछले हजारों वर्षों में पत्थर में बदला है उनकी शक्तियां मेरे पास आ गई हैं! अब मैं उन शक्तियों का उस सैन्य मूर्ति जैसे अपने शिकारों के माध्यम से भी प्रयोग कर सकती हूं और उन शक्तियों का प्रयोग बगैर उनके भी कर सकती हूं।"
"शुद्ध ऊर्जा शक्ति के रूप में-"
आऽऽह! यह क्या था? बीच हवा में किसी चीज ने मुझ पर वार किया है! पर ऐसी क्या चीज है जो दिखे नहीं और वार कर सके?
नहीं! कुछ दिख रहा है! हवा में एक आकृति उभर रही है! एक अजीबोगरीब आकृति!

खचाक
ओफ्! ये आकृति सिर्फ अजीबो-गरीब नहीं, खतरनाक भी है! अब बगैर इससे निपटे मैं उस उड़ती वस्तु के पीछे नहीं जा सकता! शायद इस खूंखार प्राणी का मकसद भी यही है!
क्योंकि यह मुझको कई टुकड़ों में काट डालना चाहता है!
लेकिन ये जानता नहीं है कि इसका मुकाबला परमाणु से है! मैं पलभर में इसको रास्ते से हटाकर उस उड़ती वस्तु के पीछे बढ़ जाऊंगा!
और फिर उस वस्तु के जरिए यह जानने की कोशिश करूंगा कि इज़्रायली डेलीगेशन के विमान पर हमला करके मारने की चेष्टा के पीछे किसका हाथ था...
...अरे!
मेरा हल्का परमाणु वार इसके आर-पार हो गया!

मुझको इसे परमाणु रस्सी से बांधना पड़ेगा!
अरे! परमाणु रस्सी तो ऐसे बिखर गई, जैसे मैं हवा को बांधने की कोशिश कर रहा हूं!
और यह चिंगारियों में भी बिखर गई!
अब मैं क्या करूं?
मैं परमाणु कणों में बदलकर इसके वारों से बचने का खतरा भी मोल नहीं ले सकता! वर्ना कहीं मेरा हाल भी मेरी परमाणु रस्सी जैसा न हो जाए!
अब शायद मुझको उस उड़ती वस्तु के पीछे जाने का इरादा भी छोड़ देना चाहिए!
छपाक
इरादा छोड़ देने वाला ख्याल अच्छा था-
क्योंकि कोई और भी उड़ती खोपड़ी के गिरने के संभावित स्थान की तरफ बढ़ रहा था-

मुंबई की तरफ-

उस शहर की तरफ जहां पर रहता है-

डोगा-

अरे! ये कुत्ते कहां से आ गए? वॉचमैन कहां है?

सो रहा होगा! उसकी कामचोरी की वजह से जब देखो मछली की गंध सूंघते हुए कुत्ते चले आते हैं!

अब इस 'फिश-पैकेजिंग प्लांट' के चारों तरफ लोहे के जालियां और गेट लगवाने पड़ेंगे!

लोहे की दीवारें लगवा लो!

कुत्ते तो मछली की गंध के पीछे खिंचे आ सकते हैं! पर तुम? तुमको भी मछलियां पसंद हैं क्या?
ये कुत्ते नशीली चीजों को सूंघते हैं! फिर चाहे वे चीजें सड़ी मछलियों की बदबू के पीछे ही क्यों न छिपी हों!
न... नशीली चीजें? कैसी नशीली चीजें? हम न सड़ी मछली रखते हैं, न ही नशीली वस्तुएं।
तो फिर शायद इन मछलियों ने मरने से पहले...
...इन पैकेटों को निगल लिया होगा!
ये पैकेट... हां, हां! इन मछलियों ने इन पैकेटों को अपने आप ही निगला होगा!
ह... हमने तो इनके अंदर...
...रिमोट बम लगाए थे! ताकि पकड़े जाने पर सुबूत भी नष्ट हो जाएं...
...और पकड़ने वाला भी!
डोगा अगर ऐन वक्त पर सतर्क न हो जाता तो शायद उसके हाथ बाजू सहित उड़ जाते-
बेड़ाम
लेकिन धमाके सिर्फ उसके हाथों को ही नुकसान पहुंचा पाए-
आऽऽऽह!
ये खास इंतजाम तेरे लिए ही किया गया था, डोगा!
ताकि अगर तू आ जाए तो बच कर न जा पाए!

कंकाली! आ गया तेरा शिकार!
निकाल ले इसका कंकाल, और सजा ले अपने ट्रॉफी रूम में!
हा हा ssss कंकाली इसका सारा मांस नोंच डालेगा और बचेगा सिर्फ इसका कंकाल!
आsss ह!
डोगा के दोनों हाथ बेकार हो चुके थे! और उनसे उठता दर्द डोगा का ध्यान भटका रहा था -
लेकिन डोगा के दोस्त डोगा पर अपनी जान भी दे सकते थे -
और वह जान उनको देनी ही पड़ी-
कंकाली के तेज ब्लेड खाल को काटते चले गए-
और एक झटके ने कुत्तों को त्वचा के आवरण से आजाद कर दिया-

अब कंकाली डोगा की भी खाल उतारने के मूड में था-
और डोगा के हाथों में न तो बंदूक उठाने की ताकत थी-
और न ही उसकी सहायता करने के लिए कुत्ते मौजूद थे-
लोहे का कवच भी तुझको नहीं बचा सकता डोगा! क्योंकि ये खुद मेरे 'स्टील कटर' से बच नहीं सकता!
कड़ाक
डोगा के सुरक्षा कवच, एक-एक करके धराशायी होते जा रहे थे-
उसको शायद मदद की जरूरत थी-
लेकिन उसकी तरफ बढ़ती परमाणु नाम की मदद को खुद मदद की जरूरत थी-
फिलहाल वह अपने आकार को छोटा करके वारों से बच रहा था-
ओह! मेरा कोई भी वार इस पर असर नहीं कर रहा है। छोटा होकर मैं इसके वारों से तो बच ले रहा हूं लेकिन यह खतरनाक भी है! क्योंकि इस छोटे रूप में इसका एक ही स्पर्श मुझको खत्म करने के लिए काफी होगा!
परमाणु को अगले ही पल अपनी जिन्दगी का सबसे बड़ा झटका लगा-
आऽऽऽह! मेरी परमाणु शक्ति का एक बड़ा हिस्सा इसके सिर्फ एक ही स्पर्श से नष्ट हो गया!

और मेरी बची परमाणु ऊर्जा को खींचकर ये और विशालकाय रूप धारण कर रहा है! जल्दी ही मेरा शरीर एक सूखा खोल बनकर रह जाएगा!
और मैं कुछ भी नहीं कर पाऊंगा! न अपनी जान बचा पाऊंगा और न ही उस उड़ती वस्तु के पीछे जा पाऊंगा!
एक मिनट! यह ऊर्जा पीकर अपना आकार बढ़ाना चाहता है तो मैं इसको ऊर्जा दूंगा!
पर अपनी परमाणु ऊर्जा नहीं!
ये मेरे पीछे आ रहा है! गुड! मैं ठीक ऐसा ही चाहता हूं! मेरे पीछे आकर...
...यह भी इन भीषण तूफानी बादलों में फंस जाएगा!
इसको यकीन है कि इसको कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकता! इसीलिए ये बचने की कोशिश कतई नहीं करेगा!
और हवा में रुकी रह सकने वाली मेरी परमाणु रस्सियों का समूह...

...बादलों में चमकती एक अरब वोल्ट की बिजलियों को इसके शरीर तक का रास्ता दिखा देगा!
हर झटका इसके शरीर में ऊर्जा भरकर इसको और बड़ा करता जाएगा...
...और आखिरकार यह फट जाएगा! क्योंकि किसी भी चीज के बढ़ने की एक सीमा होती है!
और इसका शरीर भी अरबों वोल्ट की बिजलियों की ऊर्जा को समेटकर नहीं रख सकता था!
मुंबई-
अब मैं आराम से उस उड़ती वस्तु के पीछे जा सकता हूं!
पता नहीं वह अब तक कितनी दूर निकल गई होगी!
छी! तू ही वह डोगा है जिसके बारे में कंकाली ने इतना सुना था! अरे तुझसे ज्यादा तो एक बकरा खाल निकालते वक्त लड़ता है।

चिल्ला! चीख डोगा, चीख! तड़प! एड़ियां रगड़-रगड़ कर मर...
काटना होगा!
आऽऽह! हाथों का ये दर्द! मुझे कुछ करने नहीं दे रहा है! इस दर्द का संपर्क दिमाग से काटना होगा!
और ये काम करेंगी मछलियों की ये आंते!
बाजू आंतों की डोरियों से कसते चले गए-
और बाजुओं में खून का दौड़ान रुक गया-
बाजू सुन्न हो गए-
चीख डोगा चीख! वर्ना तेरे बाजुओं को कंधों से काट दूंगा!
तुझे अब दर्द क्यों नहीं हो रहा है?
क्योंकि मेरे हाथ सुन्न हो चुके हैं!
अब बारी तेरे दिमाग की है!
अपनी मौत का सामान तूने खुद ही चुन लिया है!
अब लड़ेगा कैसे, डोगा?

मैड्यूसा
ऐसे, कंकाली!
ऐसे!
और ऐसे!
तड़ाक
हैं!
तुझे काटना बहुत पसंद है, न?
आऽऽऽह! बगैर हाथों के कब तक लड़ेगा, डोगा? अब मैं तेरी टांगें काटूंगा! तब तू...
तो काट अपने आपको!

काट!
खटच
अं... हां हां! आऽऽऽऽऽ
और गहरा काट!
हर जगह पर काट!
आंऽऽऽ! काटता हूं! काटता हूं!
खच
काट!
कच
खच
डोगा समस्या को जड़ से खत्म कर देता था-
खचाक
लोग खाल को भूसे से भरवाते हैं! इसने कंकाली की खाल में हेरोइन भर दी!
थाने का रास्ता पता है न तुझे!
म...मैं तो भूल गया!
हां... हां! पुलिस ही हमको इस राक्षस से बचा सकती है!

सिर्फ एक ही चीज तुम को डोगा से दूर ले जा सकती है!
मौत!
कड़ाकक
आऽऽऽह! ये नशे का गद तो खत्म हो गया! पर मेरा खून बहुत बह चुका है! कमजोरी लग रही है! और... चक्कर आ...
...रहा... है!
मैड्यूसा का मुंड मुंबई तक आ गया था-
डोगा के शरीर के धूल बन जाने में सिर्फ एक पल बचा था-
और उसके निशाने पर बेहोश डोगा का शरीर था-
लेकिन वह पल बीत नहीं पाया-
आऽऽऽह! परमाणु! तुम यहां कैसे आ गए?
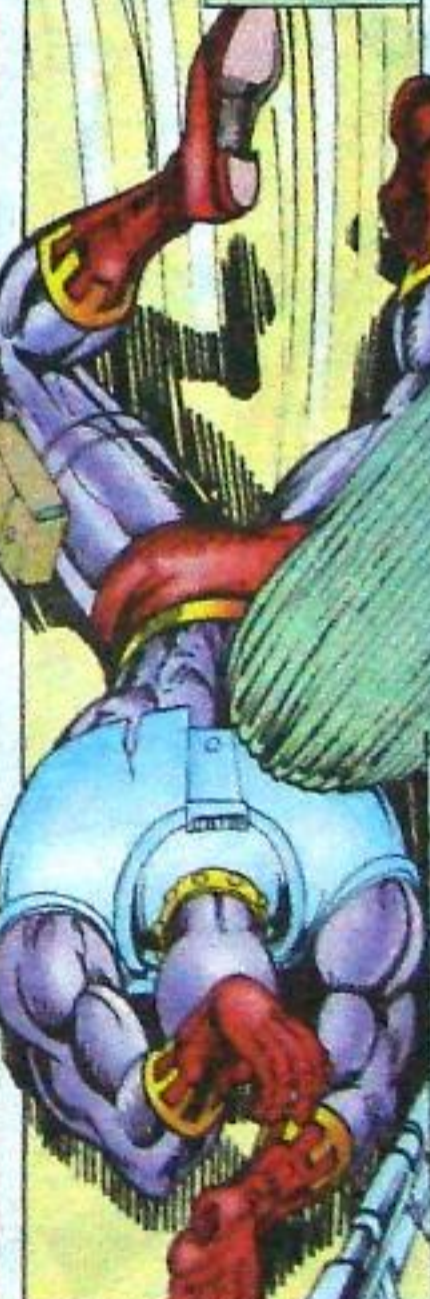
इसके पीछे!
ओऽऽऽ क्या है ये चीज ? सड़क में दस फुट गहरा गड्ढा हो गया, पर इसको नुकसान नहीं पहुंचा !
इसको नुकसान नहीं पहुंचाया जा सकता!
इसीलिए इसको दफनाना ही उचित होगा!
नागराज और ध्रुव! तुम भी यहां पर ? और तुम्हारे साथ ये कौन है ? साफ-साफ बताओ कि ये मामला क्या है ?
ये कपाल कुंडला है! और ये दुनिया को बचाने के लिए हमारी एक-मात्र उम्मीद है!
ये जो 'चीज' कपाल कुंडला दफना रही है, वह मैडूयूसा का सिर है! वह शक्ति जो पूरी दुनिया को पत्थर में बदल सकती है!

और फिर कुछ ही देर बाद-
यानी मैड्यूसा का धड़ अभी भी खुला घूम रहा है। मेरा मतलब... कहीं और मौजूद है! फिर तो उसको ढूंढना भी बहुत जरूरी है! तभी इस समस्या को जड़ से मिटाया जा सकेगा!
पर धड़ को हम ढूंढेंगे कैसे?
अरे! गड्ढे की मिट्टी हिल क्यों रही है! ठीक से भरी नहीं है क्या?
ओ गॉड!
सर और धड़ आपस में मिल चुके थे-
और विषंधर के माध्यम से बहती ऊर्जा ने मैड्यूसा के शरीर में प्रवेश कर लिया था-
ये तो मैड्यूसा की ममी का धड़ है! और इसको गटर के रास्ते विषंधर लेकर आया है!
विषंधर कौन? खैर छोड़ो, और इस पर वार करो! धड़ और सिर आपस में मिलने नहीं चाहिए!
लेकिन देर तो हो चुकी थी-
मैड्यूसा तेरहवें आयाम से आजाद हो गई थी-
ओफ्! इसको देखना मत! आंखें बंद करो!
कपाल कुंडला की सलाह पर ज्यादा यकीन करने वाले नागराज और ध्रुव ने तो आंखें तुरन्त बंद कर लीं-

लेकिन डोगा और परमाणु ने सलाह की गंभीरता को नहीं समझा-
और पलभर में उनकी हालत गंभीर हो गई-
ओफ़! परमाणु और डोगा पत्थर में बदल गए हैं! अब हमको ही मैडूयूसा को रोकना पड़ेगा।
और ये काम हमको बगैर इसकी तरफ देखे करना पड़ेगा।
और ये काम हम करेंगे कैसे ये मुझको नहीं पता!
तुम ये काम अपने सांपों की मदद से करो और मैं अपने पशु पक्षी मित्रों की मदद से करता हूं!
ये संभव नहीं है, नागराज! मैडूयूसा की शक्ल हर जीवित प्राणी को पत्थर में बदल सकती है! फिर चाहे वे पशु पक्षी हों या सर्प हों!
फिर हम क्या करें? बगैर देखे कैसे हमला करें मैडूयूसा पर?
एक रास्ता है नागराज! एक रास्ता है!
ऐसा कौन सा रास्ता है जो हम नहीं सोच पाए, वह इसको पता है?
ध्रुव पर भरोसा रखो कपाल कुंडला! वह जो सोचता है वो होता है एकदम आसान! पर, उसका असर होता है चमत्कारी!
ध्रुव ने एक ऐसा ही आसान और चमत्कारी रास्ता ढूंढ निकाला था-
मैडूयूसा पर हमला करने के लिए-
आऽऽऽह! तांत्रिक वार और सर्प वार मुझसे आकर टकराए हैं!
पर कैसे? बगैर देखे ये मुझ पर वार कैसे कर रहे हैं?

वार मैड्यूसा को देखकर नहीं बल्कि उसकी परछाईं को देखकर हो रहा है! मैंने इस एरिया में खड़ी सभी कारों की हेडलाइटें ऑन कर दी हैं। कारों के दरवाजे तो गैरकानूनी रूप से ही खोलने पड़े, पर उनकी लाइटों ने हमारा काम कर दिया!
मैंने कहा था न कपाल कुंडला!
आऽऽऽह! ये शैतान मुझको नजर नहीं आ रहे हैं, पर मुझ पर वार करते ही जा रहे हैं! ऐसे तो मैं नष्ट हो जाऊंगी! अपनी बहन विषाला की तरह!
मान गई ध्रुव! तुम्हारा दिमाग मेरे कपाल तंत्रों से बढ़ कर है! अब मैड्यूसा नहीं बचेगी!
ओह! तो तुम विषाला की बहन हो! उसको भी नागराज और ध्रुव ने ही खत्म किया था!
वह भी तुम्हारी तरह एक मणि के चक्कर में ही मारी गई थी! और वह भी तुम्हारे चमचे विषंधर के कारण!

विषंधर को तो सजा मैं दूंगी! जरूर दूंगी! पर वह काम बाद में होगा!
अब तुम लोगों को सज़ा देने का वक्त है! और ये सजा तुमको जरूर मिलेगी!
और ये सजा तुमको देंगे मेरे गुलाम!
यानी तुम्हारे अपने दोस्त!
अब मैं चली पूरी दुनिया को अपना गुलाम बनाने! और मेरी विकसित शक्तियों के साथ यह कुछ ही देर का काम है!
आज की दुनिया में जो विकास है अब वे ही उनके विनाश का कारण बनेंगे!
अरे! अरे! मेडूयुसा तो चल दी! और पत्थर की मूर्ति बन चुके परमाणु और डोगा भी चल दिए हैं!
वे अब मेडूयुसा के गुलाम हो चुके हैं! हम पर हमला करने के लिए आ रहे हैं! और इनकी शक्तियां...
...अभी तक इनके ही पास हैं!
बचो इनसे! आऽऽह!
डोगा और परमाणु की अविनाशी मूर्तियों ने नागराज, ध्रुव और कपाल कुंडला को घेर लिया था-

अब वे मैड्यूसा को रोकने के लिए उसके पीछे नहीं जा सकते थे-
भारती कम्युनिकेशंस-
हा हा हा! तो ये है मानवों की प्रगति का एक नमूना! लेकिन अब ये इनका विनाश करने में मेरी सहायता करेगा! एक सामूहिक महाविनाश! और यह काम कुछ ही पलों में हो जाएगा!
ए ए ए! कौन हो तुम? किसी सीरियल में काम करती हो क्या?
और तुम छत पर कैसे पहुंच गई?
जानती नहीं कि एक्टरों का छत पर जाना मना...
भारती कम्युनिकेशंस के कर्मचारी मुंह खोल तो रहे थे, पर बंद नहीं कर पा रहे थे-
अक्!
मेरे गुलामों के राज्य में तुम्हारा स्वागत है मानवों...
...अब तुम वैसा ही करोगे जैसा मैं कहूंगी!
आ!

मूर्ति बन चुके सारे कर्मचारी मेडूयूसा के गुलाम बन चुके थे-
मैं जानती हूं कि ये यंत्र क्या कर सकता है! परंतु इसको चलाना मुझे नहीं आता! इसको चलाओ!
अब पूरी दुनिया के मानव एक साथ मेडूयूसा की शक्ल देखेंगे, और पत्थर में बदल जाएंगे!
अब मेरी शक्ति इतनी विकसित हो गई है कि मेरी छाया में भी प्राणियों को पत्थर में बदलने की शक्ति आ गई है!
आरती चेनेल का प्रसारण शुरू होते ही पूरी दुनिया तो नहीं, पर दुनिया की आबादी के एक बड़े हिस्से का मूर्तियों में बदल जाना तय था-
पर नागराज और ध्रुव का काम शायद उससे पहले ही तमाम हो जाने वाला था-
परमाणु को मूर्तिरूप में भी मैं तोड़ना नहीं चाहता ध्रुव! ऐसा होने से परमाणु शायद जिन्दा नहीं बचेगा!
तुम्हारे वार से अगर परमाणु टूट भी गया तो फिर जुड़ जाएगा! मैंने तुमको उस सैनिक मूर्ति के बारे में बताया था न!
यहां पर तो वैसा कोई सीमेंट टैंक भी नहीं है जिसकी मदद से मैंने उसको काबू में किया था!

हमारा कोई भी वार इनको हरा नहीं सकता! पर इनका एक ही वार हमारी हड्डियां तोड़ सकता है!

ये मैड्यूसा की शक्ति है, कोई गड़बड़ जरूर है!

स्क्रीन की तरफ मत देखना।

अरे! ये...ये क्या? शो विंडो में रखे टी. वी. अपने आप ऑन हो रहे हैं!

कपाल कुंडला का ख्याल एकदम सही था-

मैड्यूसा ने भारती कम्युनिकेशंस के गुलाम कर्मचारियों की मदद से पूरी दुनिया के नेटवर्कों को आपस में जोड़ लिया था-

और पूरी दुनिया में मैड्यूसा की शक्ल एक साथ प्रसारित हो रही थी-

इस दुनिया के मानवों! देखो अपनी महारानी की शक्ल को और बन जाओ मेरे गुलाम!

हर जीवित प्राणी मूर्ति में बदल जाएगा! सिवाय सर्पों के! क्योंकि अब पृथ्वी पर सर्पराज शुरू होगा! और मानव करेंगे उनकी गुलामी!

पूरी दुनिया के वे जीवित प्राणी, जिन्होंने मैड्यूसा को देखा, तुरन्त ही पत्थर में बदल गए-

विस्तार से जानने के लिए पढ़ें : प्रलय

हम न तो इनको रोक सकते हैं और न ही हमला करना रोकने के लिए इनको समझा सकते हैं!

ये हमला करना तभी रोकेंगे जब या तो हम टूट जाएंगे और या फिर पत्थर में बदल जाएंगे!

फिर तो एक ही काम हो सकता है! भागो!

उस कंस्ट्रक्शन साइट की तरफ!

शायद यहां पर हमको इनसे बचने का स्थान मिल सके!

अब इस दुनिया में छुपने के ज्यादा स्थान नहीं बचे थे-

ये तो गए! अब बताओ तुम किस योजना की बात कर रही थी?
तुम्हारे चूने के घोल के ऊपर सीमेंट की पर्त चढ़ाने वाले आइडिए ने हमको बचा लिया ध्रुव! वर्ना न हम रहते और न ही कोई योजना!
ये हमको पत्थर की मूर्ति समझ कर लौट गए!
बचाने वाला तो तुम्हारा तांत्रिक कवच था जिसको हमने मलबे में दब कर पिसने से बचा लिया!
बातों में समय व्यर्थ मत करो!
योजना बताओ!
तुमको तेरहवें आयाम में जाना पड़ेगा! इस शरीर के साथ!
पर क्यों? मैडूयूसा तो तेरहवें आयाम से यहां पर आ गई है! अब वहां पर क्या है?
यह मुझे नहीं पता! पर मैडूयूसा की शक्तियों का राज वहीं पर छुपा है! मैडूयूसा की शक्तियों को नष्ट कर दो तो मैडूयूसा खुद नष्ट हो जाएगी!
पर हम उस आयाम में जाएंगे कैसे?
मैं खोलूंगी उस आयाम का द्वार! और तब तक खोले रहूंगी जब तक तुम लोग वापस नहीं आ जाते!
अब सबसे खास बात! तेरहवें आयाम में इस सातवें आयाम के नियम काम नहीं करते! वहां जाकर तुम्हारा क्या होगा यह मुझे नहीं पता! और वहां पर मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी!
क्योंकि मुझको तेरहवें आयाम का द्वार इस तरफ से खोले रखना है! अगर ये द्वार बंद हो गया तो तुम कभी वापस नहीं आ पाओगे!
अब मैं द्वार खोलने के लिए कपालरंध्र साधना करूंगी!

कपालकुंडला की यह कोशिश अनदेखी नहीं गई थी-
ये... ये क्या हो रहा है? तेरहवें आयाम का द्वार फिर से खोला जा रहा है! यानी उस कपालकुंडला को शक हो गया है कि मेरी शक्ति का केन्द्र यहीं पर है!
मुझे उसको रोकना होगा! हर कीमत पर रोकना होगा!
अब अगर कुछ रुकेगा तो इस दुनिया का विनाश...
और रुकेगी तू! और तुझको रोकूंगा मैं!
वह विवाह नहीं, एक सौदा था जो तेरी बहन ने स्फटिकमणि पाने के लिए रचा था! इसी दुष्कर्म की सजा उसको मिली थी! पर आज तेरे दुष्कर्मों की सजा तुझको कालदूत स्वयं देगा!
कालदूत! तू... तू तो कालदूत है! मैंने सदियों के बाद भी तुझको पहचान लिया!
तूने मेरी बहन विषाला की जिन्दगी बर्बाद कर दी! पहले उससे शादी की और फिर शादी तोड़ दी!
तू सर्प होने के कारण मैड्यूसा को देखकर भी पत्थर में नहीं बदल रहा है! लेकिन मैड्यूसा के पास तुझे गुलाम बनाने के और भी तरीके हैं!
कालदूत ने अंजाने में कपालकुंडला को इतना वक्त दे दिया था-

कि वह तेरहवें आयाम का द्वार खोल सके-
जाओ नागराज और ध्रुव! पर ध्यान रखना, इस दुनिया और मानवता को बचाना अब सिर्फ तुम दोनों पर निर्भर है।
ये तो हम समझ गए कपाल कुंडला। पर तेरहवें आयाम में हम करेंगे क्या?
किस चीज को ढूंढेंगे? और उससे कैसे निपटेंगे?
तुम्हारे किसी भी सवाल का जवाब मेरे पास नहीं है! वहां पर जो कुछ भी तुम करोगे, वह तुम अपनी सोच-समझ के अनुसार ही करोगे!
बस, एक बात का ध्यान रखना...
...रास्ते से मत हटना!
रास्ते से मत हटना! इसका मतलब क्या हुआ?
आयाम में तुमको कई अजीब सी शक्तियां मिलेंगी, तुमको डराएंगी, बहकाएंगी!
पर तुम अपने लक्ष्य को मत भूलना। रास्ते से मत हटना!
ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे!
कपाल कुंडला की शक्तियों ने दोनों रक्षकों को तेरहवें आयाम में धकेल दिया-
और जब तेज रोशनी की चमक से अंधी हुई दोनों की आंखें कुछ देखने योग्य हुई-

तो दोनों ने अपने आपको एक अद्भुत जगत में पाया-
ये हम कहां आ गए हैं, नागराज? चारों तरफ चमकते रास्ते बने हुए हैं! रोशनियां उड़ रही हैं। और न किसी तरह की जमीन का नामोनिशान नजर आ रहा है, और न ही आसमान का!
क्योंकि अब तुम दोनों मुझमें समा जाओगे! और इस काम में इस आयाम की शक्ति मेरी मदद करेगी! क्योंकि कभी मुझको कैद में रखने वाली इस आयाम की शक्ति अब मेरे इशारों पर नाचती है!
अब तुम्हारा भी नामो-निशान कहीं नहीं मिलेगा सातवें आयाम के प्राणियों! इस ब्रह्मांड के सैकड़ों, हजारों आयामों के किसी भी आयाम में नहीं मिलेगा!
मैड्यूसा! यहां पर!
नहीं नागराज! ये मैड्यूसा नहीं हो सकती! इसने हमको पहचाना नहीं...

और इसको देखने बाद भी हम पत्थर में नहीं बदले...
आऽऽऽह!
तुम मेरी सातवें आयाम की शक्तियों का जिक्र कर रहे हो! इस आयाम में उन शक्तियों का रूप कुछ और है!
मैं मैड्यूसा का वह रूप हूं जिसको वह तेरहवें आयाम के अपने राज्य की देख-भाल करने के लिए छोड़ गई है!
हम रोशनी में बदलकर इसके शरीर मे समाते जा रहे हैं, ध्रुव!
कुछ सोचो! वर्ना ये हमको निगल जाएगी!
हमेशा के लिए!
लेकिन ऐसा हो नहीं पाया-
अरे! इसने हमको प्रकाश रूप में बदल तो दिया, पर अपने शरीर में रख नहीं पाई!
तुम मानवों के साथ कोई और शक्ति भी है जिसे मैं पचा नहीं पा रही हूं!
लेकिन फिर भी तुम दोनों मुझसे बच नहीं पाओगे!
यहां मैड्यूसा का शासन है! और यहां पर आने वाला हर प्राणी मैड्यूसा का गुलाम है!
ये कपाल कुंडला की शक्ति की बात कर रही है!...

अब ज्यादा देर तक कोई भी शक्ति तुम्हारा साथ नहीं देगी! तुम प्रकाश में नहीं बल्कि उस खास ऊर्जा में बदल गए हो जो सिर्फ इस तेरहवें आयाम में रहती हैं!
और उस ऊर्जा पर मैड्यूसा का शासन चलता है! इसीलिए तुम दोनों को मैड्यूसा के वश में आना ही होगा!
हमारे पैर! ये रास्ता हमारे पैरों को पकड़ रहा है!
वह विशाल गोला 'आयाम-पुंज' है! तुम्हारा कैदखाना! जहां पर तुम अनंतकाल तक कैद रहोगे! और उसमें जाने के बाद तुम्हारी सारी शक्तियां मेरी हो जाएंगी! और हां, उसमें तुमको तुम्हारे कई साथी भी मिलेंगे! पृथ्वी पर मैड्यूसा ने जिनको भी पत्थर में बदला है, उनके ऊर्जा रूप तेरहवें आयाम में आकर इस गोले में कैद हो गए हैं!
और अब ये एस्केलेटर की तरह चलकर हमको उस विशाल गोले की तरफ ले जा रहा है!
अब सभी मानवों के ऊर्जा रूप यहां पर रहेंगे और उनके माध्यम से मैड्यूसा पृथ्वी पर मौजूद उनकी पत्थर की मूर्तियों से गुलामों का काम लेगी!
और जब तक मूर्तियों के ऊर्जा रूप यहां पर कैद हैं तब तक वे मूर्तियां नष्ट नहीं हो सकतीं!
क्या है वह विशाल गोला?
जैसे वह सैन्य मूर्ति थी!
मैड्यूसा जिसका शिकार करती थी, उसकी शक्ति मैड्यूसा के पास आ जाती थी, और जब मैड्यूसा को अघोर-नाथ ने तेरहवें आयाम में कैद किया था तो उसके साथ-साथ वे शक्तियां भी इसी आयाम में आ गई होंगी!

और उन शक्तियों की मदद से ही मैडूयूसा ने इस आयाम पर अपना राज्य कायम कर लिया होगा!
बिल्कुल सही समझे मानव! और अब तुम सबकी शक्ति और अपने अविनाशी गुलामों की मदद से मैं ब्रह्मांड के हर आयाम पर अपना राज्य फैलाऊंगी!
नागराज और ध्रुव के साथ-साथ कपाल कुंडला की मुश्किलें भी बढ़ने वाली थीं-
ओह! वे दोनों मानव नागराज और ध्रुव तेरहवें आयाम के अंदर पहुंच चुके हैं, वे अद्भुत मानव मेरे लिए मुश्किलें पैदा कर सकते हैं! उनको वहीं पर रोकना होगा!
आयाम का द्वार बंद करना पड़ेगा! और ऐसा उस कपाल कुंडला को रोककर ही किया जा सकता है!
हम अगर एक बार 'आयाम पुंज' में चले गए तो हम मैडूयूसा के गुलाम हो जाएंगे! हमको आजाद होना ही पड़ेगा नागराज!
पर कैसे? इस रास्ते को तोड़ पाना ही एकमात्र उपाय है! और मेरे वार वह नहीं कर पा रहे हैं!
सुनो मेरे गुलामों! जाओ और कपाल कुंडला की साधना को भंग करके उसको चूर-चूर कर डालो!
जाओ!
मैडूयूसा का आदेश मिलते ही अनगिनत चलती-फिरती पत्थर की मूर्तियां कपाल कुंडला की तरफ बढ़ चलीं-
लेकिन कपाल कुंडला ने अपनी सुरक्षा का इंतजाम कर रखा था! एक शक्ति कवच उन मूर्तियों को कपाल कुंडला तक पहुंचने से रोक रहा था-
पर शक्ति कवच उनको कितनी देर तक रोके रख सकता था, यह कहना मुश्किल था

अब सबकुछ नागराज और ध्रुव पर निर्भर करता था-
ब्रह्मांड के सैकड़ों आयामों का भविष्य इन दो इंसानों को ही तय करना था-
शायद इसीलिए न तो मैं कुछ सोच पा रहा हूं और न ही तुम्हारी शक्तियां काम आ रही हैं!
आऽऽऽह! अब हम 'आयाम-पुंज' के एकदम पास आ गए हैं!
हमारे पास कुछ ही पलों का वक्त है!
याद करो, नागराज! कपाल कुंडला ने कहा था कि इस आयाम में सबकुछ बदल जाएगा!
काश, मेरे पास इस समय इतनी शक्ति होती कि मैं इस बाधा को चूर-चूर कर सकता तो...
ओह! यह तो टूट गया! यानी इस आयाम ने मेरी सबसे बड़ी शक्ति को बढ़ा दिया है! मेरी मानसिक शक्ति को!
तो फिर इसने मेरी नाग शक्तियों को भी बढ़ा दिया होगा!
और उसकी शक्तिशाली कुंडली ने उस रास्ते को ही पीसकर रख दिया-
कड़ाक
नागराज का चमकता शरीर सर्प की तरफ खिंचता चला गया-
यह क्या? शायद शरीर सहित आने के कारण तुम्हारे अंदर अभी भी इतनी शक्तियां हैं कि वे मुझे चुनौती दे सकें!
अच्छा है! अब तुमको मारने में ज्यादा मजा आएगा!

ओह! तुम दोनों तो खतरनाक होते जा रहे हो! लेकिन कुछ भी कर लो! मैडूयुसा तुमको आयाम पुंज में भेजकर ही रहेगी!
काली शक्तियों! हमला करो!
ओह! इसके इशारे पर उड़ते हुए 'प्रकाश प्राणी' हम पर हमला कर रहे हैं!
सिर्फ हमला नहीं कर रहे हैं, ध्रुव! ये हमको 'आयाम पुंज' की तरफ ढकेलने की कोशिश कर रहे हैं! और इनकी संख्या असीमित है! हम ज्यादा देर तक इनका मुकाबला नहीं कर पाएंगे!

नागराज और ध्रुव को नई शक्तियां तो मिल गई थीं, पर उनके दुश्मन शक्तिशाली भी थे, और तादाद में काफी ज्यादा भी-

और वे उन दोनों को 'आयाम पुंज' की कैद के मुंह तक ले आए थे-

पृथ्वी पर भी मैड्यूसा इस युद्ध को धीरे-धीरे जीतती जारही थी-

इस वक्त मेरे पास सिर्फ अपनी ही नहीं, पूरी पृथ्वी के इंसानों की शक्ति है, कालदूत! और इस शक्ति के सामने तेरी शक्तियां कुछ भी नहीं हैं!

अब जाकर मैं अपना अंतिम वार करूंगी!

" उस कपाल कुंडला को मारकर सातवें आयाम में खुलने वाले तेरहवें आयाम के द्वार को बंद कर दूंगी! फिर वह द्वार सिर्फ मेरे इशारे पर खुलेगा! और वह तभी खुलेगा जब नागराज और ध्रुव का अंत हो जाएगा-"

तेरे साधना कवच को मैड्यूसा ने तोड़ दिया है कपाल कुंडला!

और अब मैं तेरी गर्दन को तोड़ूंगी!

लेकिन अगर तू आयाम द्वार को बंद कर देगी तो मैं तुझको जान से नहीं मारूंगी। सिर्फ पत्थर का गुलाम बनाकर तुझको छोड़ दूंगी!
ऐसे कम से कम तू जिन्दा तो रहेगी!
तेरा गुलाम बनकर जीने से अच्छा तो मर जाना है, मैडूयूसा!
ओह! अगर मैंने ऐन वक्त पर आंखें बंद न कर ली होतीं तो मैं सचमुच पत्थर में बदलकर इसकी गुलाम बन गई होती।
हा हा हा! तू आंखें खोलेगी तो भी मरेगी और आंखें नहीं खोलेगी तो भी मरेगी! और दोनों ही सूरतों में ये द्वार बंद होकर ही रहेगा!
लेकिन आंखें बंद करके मैं कब तक इसका और इसके गुलामों की फौज का एक साथ सामना कर पाऊंगी, यह मुझको नहीं पता है!
आऽऽऽह! मूर्तियों पर मेरे तंत्र असर नहीं करेंगे! बचना मुश्किल है!
आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है!
और साथ ही साथ आयाम द्वार भी बंद हो रहा है!
जल्दी करो नागराज और ध्रुव! जल्दी करो!

तेरहवें आयाम में मौजूद नागराज और ध्रुव ने भी इस बदलाव को महसूस कर लिया था-
नागराज! द्वार बंद हो रहा है!
हां, ध्रुव! और इन हमलावरों की तादाद कम होने का नाम ही नहीं ले रही है!
बस! अब कुछ ही पलों के बाद ब्रह्मांड के हर आयाम पर मैड्यूसा के शासन की शुरूआत हो जाएगी!
फेंक दो इन दोनों को 'आयाम-पुंज' के अंदर!
एक मिनट! इतनी देर में मैड्यूसा के रूप ने खुद 'आयाम-पुंज' के अंदर जाकर हमको अंदर खींचने की कोशिश क्यों नहीं की है? अगर वह ऐसा करती तो अब तक हम दोनों शायद 'आयाम-पुंज के अंदर पहुंच चुके होते! इसका एक ही कारण हो सकता है! मैड्यूसा इस पुंज के अंदर जा ही नहीं सकती!
यह मैड्यूसा एक ऐसा माध्यम है जो 'आयाम-पुंज' की ऊर्जा को असली मैड्यूसा तक पहुंचाता है! यानी अगर इस मैड्यूसा को 'आयाम-पुंज' में फेंक दिया जाए तो, कुछ गड़बड़ हो सकती है!
लेकिन ऐसा करने के लिए वार इस तरह से करना होगा कि मैड्यूसा को शक न हो!
और ऐसा करने का सिर्फ एक ही तरीका मेरे दिमाग में आ रहा है!

कि मैडूयूसा को 'आयाम-पुंज' के द्वार की तरफ धक्का न देकर विपरीत दिशा में धक्का दिया जाए!
ओह, समझी! तू सीधे मुझ पर वार करके मुझको हराना चाहता है! ताकि ये लड़ाई तू एक झटके में जीत सके!
पर मैडूयूसा को इस आयाम में कोई हरा नहीं सकता! कोई नहीं!
कोई नहींऽऽऽ
ध्रुव का ख्याल सही था! मैडूयूसा के उस रूप का 'आयाम-पुंज' से संपर्क होते ही शॉर्ट-सर्किट सी स्थिति पैदा हो गई थी-
और जहां शॉर्ट-सर्किट होगा, वहां पर धमाका तो होगा ही-

सातवें आयाम में- यानी पृथ्वी पर-
अरे! अरे! आयाम द्वार बंद होते-होते एकाएक ये क्या हो गया? द्वार एकाएक विशाल हो गया है! और... और...
...उसमें से मानवों के प्रकाश रूप बाढ़ की तरह निकलकर चले आ रहे हैं! यानी सत्यानाश हो गया है! उन दोनों मानवों ने 'ऊर्जा-आयाम' को नष्ट कर दिया है!
अब ये सारे मानव फिर से सामान्य हो जाएंगे और सदियों से मेरे शिकार बने दूसरे प्राणी भी मेरी शक्तियों से आजाद हो जाएंगे!
लेकिन मैं मैडूयूसा हूं!
चेहरा दिखाते ही दूसरों को पत्थर बना देने की शक्ति अभी भी मेरे पास है!
उस शक्ति से मैं ब्रह्मांड को फिर से जीत...
...लूंगी!
अरे! ये तो कमाल हो गया! मैडूयूसा पत्थर बन गई!
दूसरों को पत्थर बनाने वाली खुद मूर्ति बन गई!
पर कैसे?

वह शायद इसलिए क्योंकि तेरहवें आयाम में मौजूद मैडूयूसा के प्रतिरूप को हमने उस आयाम पुंज में फेंक दिया था, जिससे पृथ्वी के सभी मानवों के प्रकाश रूप कैद थे! इससे शॉर्ट सर्किट हो गया और सभी मानवों के प्रकाश रूप तो आज़ाद हो गए पर मैडूयूसा का रूप उसी में कैद होकर रह गया!
ओह! और इस कारण से मैडूयूसा भी उसी प्रक्रिया से पत्थर बन गई जिस प्रक्रिया से वह दूसरों को पत्थर बनाती थी!
लेकिन वह तुम दोनों के सामने नहीं टिक पाई!
आज तुम लोगों ने अपने ब्रह्मांड रक्षक नाम को सार्थक कर दिया!
समाप्त.